

# पैचामृताभिष्ठेक पाठ<sup>े</sup> <sup>एवं</sup> श्रावक पूजाविधान

\*\*\*\*\*

ः सग्राहकः श्री प्रतिष्ठाचार्यं ज्ञ. सूरजमलजी जैन / गाचार्यं संवस्थ

> ं सपादकः चर्धमान पाइर्वनाथ शास्त्री क्रियाण भवन, सोलापूर.

ः प्रकाशकः अी मांगीलालजी पहाडचा उस्मानगंज, हैदराबाद (आं. प्र.)

प्रति १०००

वीर सं. २४९१ सन् १९६५

मूल्य निःयपूजन विषय। नुक्रमणिका

111112 1111111	
प्त. नं.	पृष्ठ नं
५ प्रारभिक विधि	8
२ पूजामृखविधि	7
३ ईर्यापथ शुद्धि	3
४ सकलीकरण	; 4
५ पंचामृताभिषेक पाठ	હ
६ शांतिमंत्र	20
७ महाशांतिमंत्र	29
८ अरिहंत पूजा	३३
९ देववंदनाविधि	३७
१० स्व. आचार्यं शांतिसागर	•
वीरसागरचंद्रसागर सम्मिलितपूजन	36
११ वा. शांतिसागर पूजन	48
१२ आ. वीरसागर पूजन	६०
१३ मा शिवसागर पूज <b>न</b>	Ęų
१४ श्री मुनित्रय आरती	90
१५ भी शांतिसागर मारती	90
१६ श्री वीरसागर बारती	७२
१७ श्री शिवसागर आरती	७२
१८ श्री आदिनाथ आरती	Fe
९ भी पार्वनाथ आरती	98
🕟 भी शांतिनाथ आरती	40
१ श्री पंचपरमेष्ठीकी सास्ती	७३
२ श्री महावीरस्वामीकी आरती	७७
३ श्री जिनवाणी अग्रती	98
४ श्रीसिद्ध भगवानकी आरती	60

# संपादकीय निवेदन

श्री परमपूज्य अजिका श्री ज्ञानमती जीने गतवर्ष संघसहित चातुर्मास हैदराबाद नगरांतर्गंत केसरबागमें किया था। चातुर्मासमें बडी प्रभावना हुई। श्री क्षुर अभयमती जीका दीक्षा विद्यान, अनेक व्रतविद्यान, पूजा अनुष्ठान आदि कार्यक्रमों से केसरबागमें धार्मिकवातावरणकी अपूर्व शोभा आगई थी। समी श्रावक-श्राविकाये संवसेवा, सयमाराघना, व्रतानुष्ठान आदिमें रत रहते थे। ऋषिमंडल, सिद्धचक्र आदि महान् विद्यान भी हुए। महाशांतिनाथ विद्यान तो अनेक बार हुआ, पूज्य माताजीका उपदेश सदा होता था। माताजी स्वयं विदुषी एवं संयमशील तपस्विनी है।

भाद्रपद पर्वमें हमें भी हैवराबाद समाजने बुला लिया था। प्रतिनिन्य दो बार हमारा प्रवचन होता था, भाद्रपदपर्वमें अनेक श्रावक श्राविकावोंने व्रत उपवास आदि किये थे, बड़ी ही प्रभावना हुई।

#### श्री सी. वसंतीबाई मांगीलालजी

हैदराबादके प्रसिद्ध पहाडचा घरानेके होनहार धार्मिक युवकरत श्री मांगीलालजी पहाडियाकी धमंपत्नी सी. वसंती बाईजीने दशलक्षणके १० उपवास बहुत ही उल्लास व शांतिके साथ किया था। आपके इस अनुष्ठानमें आपके सारे परिवारने बहुतही आनंदके साथ सहयोग दिया था। आपके पिता श्री धमंनिष्ठ गुंदभक्त शेठ सुवालालजी वरंगलवाले भी संघसेवामे कई महिनेतक रत थे। श्री मांगीलालजी पहाडियाके सहोदर,

पूज्य माताजी, बंबुगण आदि समी धर्मप्रेमी सज्जन हे । सी वसतीबाईके इस महान् घामिक अनुष्ठानके उपलक्ष्यमें भाई मांगीलाल जीने हजारो साधिम भाईयोंको भोजन कराकर वात्सल्य व्यक्त किया था और प्रभावना भी बांटी गई थी। इस तरह हैदराबादमें अपूर्व प्रभावना हुई।

अनुकरणीय शास्त्रदान.

इस व्रतोद्यापनकी स्मृति चिरकालतक बनी रहे, इस हेतुसे उस समय एक शास्त्रदानका भी संकल्प किया गया था। उनकी इच्छानुसार सर्व श्रावकोंको उपयोग हो इस दृष्टिसे इस प्रस्तुत ग्रंथका प्रकाशन किया गया है।

इसमें पंचामृताभिषेक, शांतिमंत्र, महाशांतिमंत्र, नित्य-पूजा, देव वंदनादिके साथ आचाय पूजादि विधानोंका सकलन किया गया है। इसका नित्य पूजा करनेवाले धार्मिक प्रवृत्तिके श्रावकोंको यथेष्ठ उपयोग होगा।

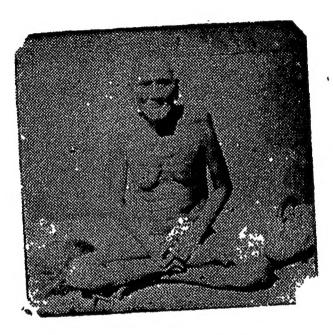
धी मांगीलालजी सारिवक व उदार प्रकृतिके सज्जन है, जन्होने अपनी धर्मपत्नीके इस पुण्य अनुष्ठानमें प्रोत्साहन ही नहीं दिया है, अपितु स्वयं भी असंख्य पुण्यका उनार्जन किया है और अन्य असंख्य भन्योंको भी पुण्योपार्जनका साधन उप-स्थित किया है, अतः वे धन्यवादके पात्र हैं।

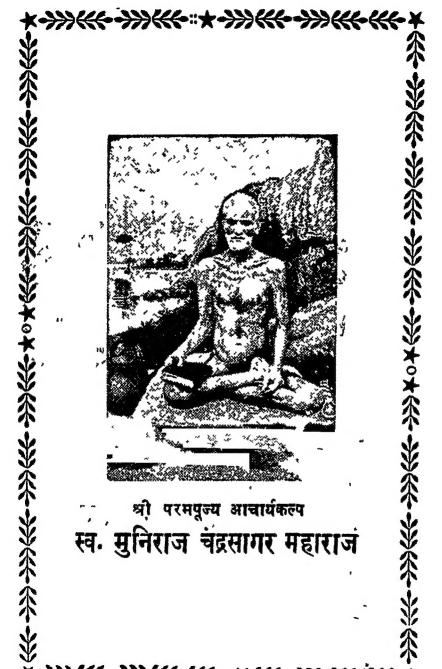
कल्याणभवन सोलापूरः १–६–६५ विनीत

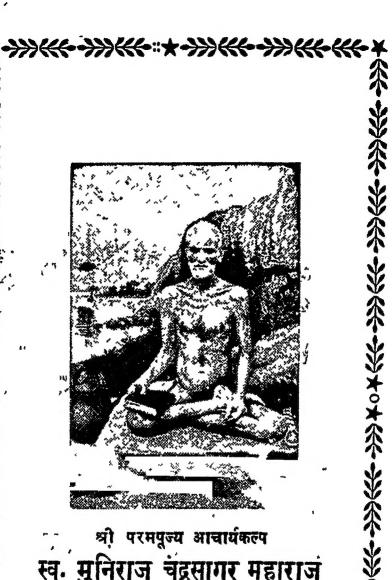
वर्धमान पार्वनाथ शास्त्री (विद्यावाचस्पति,व्याख्यानकेसरी विद्यालंकार, समाजरत आदि) \*\*\*\*\*

みんでするであると

からかん



श्री. परमपूज्य चारित्रवक्वति स्व. आचार्य शांतिसागर महाराज 



स्व मुनिराज चंद्रसागर महाराज

<del>{{+}}}</del><del>{{+}</del>



ं श्री वीतरागय नमः

# पंचामृताभिषेक पाठ एवं

# आचार्य शांतिसागर आदि महाराजोंकी पूजन

तिलक करने की विधि

जलस्तान, मत्रम्नान, व्रतस्तान, रूप तीन प्रकारके स्नानके बाद तिलक लगाकर पूजन करे।

तिलक लगानेका मंत्र

ओं-हां णमो अरहंताणं रक्ष २ स्वाहा-ललाटे ओं-हीं णमो सिद्धाणं रक्ष २ स्वाहा- न्हद्ये ओं-हूं णमो आइरियाणं रक्ष२ स्वाहादिक्षणभुजे ओं-हों णमो उवज्झा गणं रक्ष २ स्वाहावामभुजे ओं-हः णमोलोये सब्वसाहूणं रक्ष २ स्वाहा-कंठे

₹8 €

रयणत्तयंच वदे चीवीस जिणंच सन्वदा वंदे पंच गुरुणांच वंदे चारणं चरणं सदा वंदे.

# अथ पूजामुख्विधिः

स्तानानुस्तानगृद्धो विभृतसितपुष्रौतान्तरीयोत्तरीयः । कृत्वोपस्पर्शनादोन्यय जिनगृहमुद्धाटितश्रीकपाटम् ॥ सानदः संविज्ञापि विज्ञादित्रपति श्रीजिनाराधनाय ॥ ( इति प्रक्षालितपादः सन् श्रीविमानं प्राविशेत् ) चतुर्विक्षु प्यक् वलृत्त ज्यावनंकिशितिः। त्रिःपरित्यानतो जैनगहमन्तिविशाम्यहं ॥२॥ वृष्ट जिनेन्द्रभवन भवतापहारि, मन्यात्मनां विमवमभव प्रिहेतुः। दुरम्राहित्र फनधवल उवलक्टकोहि नद्धध्वजप्रकरराजिविराजमानं ॥३॥ दृष्टं घाम रसायन्ष्य महो दृष्ट निष्टीनां पदं, दुष्टं सिद्धरसस्य सद्म सदनं दृष्टं च चिन्तामणेः किंदुव्टरयथानुषिङकफलेरेझिमयाद्य ध्रुवं । ट्<sup>ट्र</sup> मुक्तिविवाहमण्डलगृहं दृष्टे जित्रभीगृहे ॥ ४॥ जयित सुरतरेन्द्र श्रीसुघानिझेरिण्याः। कुलधरणिधरोऽय जैनचैत्याभिरामः ॥ प्रविपुलफलधर्मानोकहापप्र**वा**ल-प्रवरशिखरशुभ्मत्केतनः श्रीनिकेतः॥ ५॥

श्रियः पदं जिगिविषतां मनीषिणां, तत्भृतामतनुनिमित्तमृत्तमम् । जिनेदवरप्रतिङ्घतिषुण्यकेतन-

प्रदक्षिणीकरणमिद पुनातु नः ॥ ६ ॥ इति त्रिभुवनगुरुभवनं त्रिःपरित्यागिमुखमुपगतो भगवन्तमभिवन्देत् ।

(उपर्युक्त स्तोत्रको बोलते हुगे चैत्यालयकी तीन
प्रदक्षिणा देकर ॐ इहीं इह च्हु णिसिहि २ स्वाहा । कहते हुगे
(इग्यन्त: प्रविशत् ) भीतर प्रवेश करे।
भगवानको नमन्कार करके हाथ धोकर ईर्यापथशुद्धि करे।
ॐ इहीं अमुजर सुजर स्वाहा। (हस्त्रक्षालनमंत्र:)

# ईर्यापथ शुद्धिः—

यिष्ठकमामि भते । इरियाविहय ए विराहणाए अणागुत्ते, आइगमणे णिग्गमणे, ठाणे, गमणे चंकमणे, पाणुग्गमणे, वीजुग्गमणे हिरिदुग्गमणे उच्चार पस्सवण-खेल-सिहाण वियिष्ठ पदद्वाविषयाए जे जीवा एइन्दिया वा वे इन्दिया वा, ते इन्दिया वा, चर्डार-विया वा पाँचिदया वा, णे लिलदा वा, पेलिलदा वा, संघद्विदावा संघिददा वा परिदा वदा वा, किरिच्छदा वा, लेसिदा वा, छिदिदा वा, गिदिदा वा, ठाणदो वा ठाणचंकमणदो वा, तस्स

उत्तरगुणं, तस्स पायछित्त कारणं तस्स विसोहीकरणं, जाव अरहंताणं भयवताण णमोकारं पज्जुवासं करोमि ताव कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सारामि ।

(णमो अरिहताणं इःयादि ९ जाप्य)

आलोचना-

ईर्यापथे प्रचलिताद्य मया प्रमादा-

देकेन्द्रियप्रमुखनीवनिकायवाञा ।

निवंतिता यदि भवेदयुगांतरेक्षा

मिथ्या तदस्तु दुरितं गुरुमिततो मे ॥ १ ॥

इच्छामि भते इरियाविह्यम्स आल चेउं पुरुषुत्तरद-विखणपिच्छमच उदिसविदिसासु विहरमाणेण जुगंतरदिद्विणा भव्वेण बहुव्वा । पमादवे सेण डवडवचि याए पाणभूदजीव-सत्ताण उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा सम-णुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुवकड ।

> ॐ दीं क्वीं भूः शुद्धचतु स्वाहा। (बैठने की जगह पानी छिडके)

ठॐ न्हीं क्वीं आसन निक्षिपानि स्वाहा।

( आसन विछावे )

ॐ न्हीं न्हचुं न्हचुं विसिहि आसने उपविशामि स्वाहा ( आसन पर बैठे )

ॐ न्हीं मौनिन्यताय स्वाहा (इति मौनं गृण्हीयात्) भौनले (पूजा पाठके सिवा अन्य बातें न करनेका नाम मौन है) ॐ न्हां न्हीं न्हू न्हीं न्हः नमोऽहंते श्रीमते परित्रतरजलेन पात्रशृद्धि पूजाद्रस्यशृद्धि च करोमि स्वाहा। ( पवित्र जल पूजा के बतंन और द्रव्यपर छिडके )

## सकलीकरण दिग्बंधनादि

जिनेंद्रसरणांग्वुजद्वयसमर्चनार्थं मया । समस्तदुरितापहृद्वदनवस्त्रमुद्घाट्यते ॥

षद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य देव ! त्वदीय चरणाम्बुखवीक्षणेन अद्य त्रिलोकतिलक प्रतिभासते मे समारवारिधिरयमाचुलुकप्रपाण भगवन्! नमोस्तु ते एषोऽह जिनन्द्र पूजाबन्दनां करोमि

अय सामायिकस्वीकारः॥

जयित दूरमुन्मक्तगमागमपरिश्रमाः । संसारिववरोत्तारते र्थमूता जिनक्रमाः ॥१॥ नमोऽस्तु घूतपापेभ्यः सिद्धेभ्यः ऋषिपरिष । । सामाधिक प्रवर्धहं भवभागणसूदनं ॥२॥ साम्य मे सर्वभूतेषु वैर मम न केनिचित्।। आशाः सर्वाः परित्यज्य समाधिमहामाश्रमे ॥

अथ कृत्यविज्ञापना-

नमोस्तु भगवन् ! प्रसीदतु प्रभुपादाः वंदिष्येऽहं ।
एषोऽह सायच्य सर्वसायद्ययोगाद्विरतोऽस्मि ।।
अय पौर्वान्हिक जिनेन्द्र पूजा धन्दनयां पूर्वाचावितृक्रमेण
सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजाबन्दनास्तयसमेतं श्रीमत्सिद्धभवितकायोत्सर्गं करोम्यहं ।

#### सामाथिक दंडक

णमो अरहंतण णमो सिद्धागं (१) णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाण (२) णमो लेः ए सब्द साहणं.

चतारि मंगल-अरहत मगल, तित्व मंगल, साहू मंगलं, केविलपण्णतो धम्मो मगल। चतारि लोगृत्तमा, अरहंत लोगृत्तमा, सिद्ध लोगृत्तमा, साहू लोगृत्तमा केविल पण्णतो धम्मो लोगृतमा। चतारि सरण पव्यवज्ञामि, अरहंत सरणं पव्यवज्ञामि, निद्धभरण पञ्चवज्ञामि, साहू सरण पवर्जामिं, केविल पण्णतो धम्मो सरणं पवर्जामि.

जाव अरहंसाण भयवताण पज्ज्ञुवासं करेमि तावकाळं पावकम्मं दुच्चरिय चोस्सरामि ।

( नी वार जाप्य )

## चतुर्विशतिस्तव

थोस्सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवली क्षणंत जिणे। णरपवरलोयमहिए विहुयरयमले महप्पणो।। २।। लोयम्तुज्जोययरे धम्म तित्थकरे जिणे घंदे अरहते कित्तिस्से चडवीसं चेव केवलिणो॥ २॥

## सिद्धभिनत

सविति ण्यसिद्धे संजमितिद्धे चरित्तसिद्धे य णाणम्मि वसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमशामि॥

इच्छामि मंते ! विद्धमत्तिकाउरसम्मो क्यो तस्सालोचेड

सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचित्त गुत्ताण अह वहकम्ममुक्ताणं उड्ढलोयमत्थयम्मि प्रदृष्टियाण तबसिद्धाणं णयमिद्धागं चरित्त ने सिद्धाणं अवीदाणागदवहुमाणकालत्तयमिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिण्चकालं अचेनि पूजेनि वदामि णमसामि दुक्लवल्लभो कम्मक्लओ बोहि जाहो सुगद्दगमण समाहि मरणं जिणगुणसंपत्ति हो उम्हनं।

ॐही सिद्ध परमेष्ठिने नमः अधै इति पूजामुखिक्धिः

\*\*\*\*\*

# अथ पंचामताभिषेक पाठ

आयां छदः

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं णमो उवज्ञायाणं, णमो लोए सन्त्र साहूंणं।

### मंगलाष्टक.

श्रीमस्रस्रसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतरत्नप्रभा-मास्यत्पादनखेदवः प्रवचनांभौधाववस्थायिनः । ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतान्ते पाठकाः साधवः स्तुत्या योगिननेश्च पचगुरवः कुर्वन्तु (मे) ते मंगलम् ॥१॥

सम्यदग्दर्शनबोधवृत्तमभलं रत्नत्रयं पावनं। मुक्तिर्श्वं नगराधिनायजिनपरणुक्तोपवर्गप्रदः । धर्म: सुवितसुधा च चैःयमितलं चैःयारुयं दयालयं। भीवतं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वेन्तु मे (ते) मंगलम् ॥२॥ नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवनस्याताश्चतुर्विशतिः, भीमंती भग्तेश्वरप्रभृतायो ये चिकिणी द्वादश। बे विष्णु रतिविष्णुलांगलघराः सप्तोत्तरा विश्वति-स्त्रेकात्ये प्रथितास्त्रिषध्टिपुरुषाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥३॥ देथ्योऽष्टो च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवताः। भीतीर्थं करमात्काश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा। द्वात्रिशित्यदशाधिपास्तिषिसुरा दिक्कन्यकाञ्चाष्ट्रधा। दिक्पाला दश चेत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥४॥ बे सर्वोषश्रऋद्धयः सुनपसी वृद्धिगताः पच ये। बे बाष्टांगमहानिमित्तकुशला येष्टाविधाश्वरणाः । पंचजानघरास्त्रयोपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः। सप्तेते सकलाचिता गणभृतः कुवंन्तु मे (ते) मंगलम् ॥५॥ 🕏 लासे वृषमस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे। चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽहंतां । नेपाणामिव चोर्जयंतशिखरे नेमीश्वरस्यार्वतो । निर्वादणायनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तुं मे (ते) मंगलम् ॥६॥

जयोतिर्धंतरभावनामरगृहे मेरी कुलाद्रो तथा जंबूशाल्मिलचेत्यशाखिशु तथा वक्षाररूप्यादिषु । इष्वाकारगिरी च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दी इवरे शेले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।।।।।। यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवल्ज्ञानभाक् । यः कैवल्यपुरंप्रवेशमहिमा सभावितः स्वर्गिभिः । कल्यणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।।८।। इत्यं श्रीजिनमंगलाष्टकमिद सौभाग्यसंपंत्प्रदं कल्याणेषु महोत्सवेषु सुध्ययतीर्थकगणामुषः । ये श्रुण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैधम्थिकामान्विता कक्ष्मीराश्रयते च्यपाय हिता निर्वाण्डक्ष्मीरिष ।।९।।

- इति मंगर्लाष्ट्रकम् -श्रीमिष्णिनेन्द्रमिबद्य जंग-त्रयेश । स्याद्व दनायकमनन्तचतुष्ट्याहँम् ॥

श्रीमूलसंघसुदृशां सुक्ततंकहेतु-जैनन्द्रयज्ञुविधिरेष मयाभ्यधायि ॥

(इस क्लोकको पढकर भगवान् के चरणों में पुष्पांजली अर्पण करना श्रीमन्मन्दरमुन्दरे शुचिजलैंधातै: सद्भक्षितै:।

पैठं मुनितवरं निधाय रचितं न्वत्पादपद्मस्रजः 11 इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थकिमिदं यज्ञोपवे तं देखे ।

मृद्राकंकणशेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥ (इस श्लोकको पढककर भगवान के चरणों में पुष्पांजलि अपैक करना और यज्ञोपवीत तथा साम्यण घारण करनाचाहिये) (तिलक लगाने का रहोक)

सौगन्ध्यवंगनमञ्जूतझक्ततेन,
संघ्णयंमानिमत्र गंधमिनश्चमादौ ।
आरोप्यामि वित्रुध्यवरवृत्यवन्य
पादारिवरमिवन्य जिनोत्तमानाम् ॥

( अभिषेक के लिये भूमिप्रशालन करने का रलोक )

ये संति केविदिह दिग्य कुलप्रसूता नागाः प्रम्तदलदपंषुता विद्योधाः। सरक्षणार्थमभूतेन शुगेन तेषां। प्रशालपामि पुरतः स्नयनस्य भूनिम

( अभिषेक के लिये पोठाक्षालन करने का इलोक)

क्षीराणंवन्य पयसां श्रुचिनिः प्रवाहैः । प्रक्षालित सुरवरैयंदनेकवारम् । अत्युद्घमृद्धतमहं जिनपादपीठं । प्रक्षालयानि भवसंभवतापहारि ॥

श्रीशारदामुम्खनिगंतबीजवर्णम् । श्रीमगलीकवरसर्वजनस्य नित्यम् ॥ भीमस्यय क्षपति तस्य विनाशविष्नम् । श्रीकारवर्णलिखितं जिनभद्रपीठे ॥

(पीठार श्रीकार लिखनेका श्लोक)

(दश दिक्पाल बाऱ्हान करनेका क्लोक) इंद्राग्निदण्डधरनैऋतपाशपाणी, वायुत्तरेशशिषातिकणं नद्र बन्द्राः । क्षागत्य यूर्यामह सानुचराः सचिन्हाः, स्वं स्व प्रतीच्छत बलि जिनपाविषके। ( नीचे लिखे मंत्रों हो पढ़कर दिसालों हो अर्व चढावे ) ॐ आं कौं न्हीं इन्द्र आगच्छ आगच्छ इन्द्राप स्वाहा । 🕉 आं कों -हीं अरने आगच्छ आगच्छ अरनये स्वाहा 🕫 🕉 आं कौं - हीं यन आगच्छ आगच्छ यनाय स्वाहा।. ॐ आं क्रौं न्हीं नेऋत आगच्छ आगच्छ नेऋय स्वाहा। ॐ आं क्रौं -हीं वरुण आगच्छ २ वरुणाय स्वाहा। 🕉 आं ऋौं -हीं पवन आगच्छ २ पवनाय स्वाहा। ॐ आं क्रौं -हीं कुबर आगच्छ २ कुबराय स्वाहा। 🕉 आं कौ न्हीं एशान आगच्छ २ ऐशानाय स्वाहः। 🕉 आं क्रौं -हीं धरणेंद्र आगच्छ २ धरणींद्राय स्वाहा । ॐ आं ऋाँ व्हीं सोम आगच्छ २ सोमाय स्व.हा। (इति दश दिक्पालअर्घ) नाथ ! त्रिलोकमहिताय दश प्रकार-धर्मा बुवुब्टिवरिषिक्तजगत्त्रयाय ।

ं अर्धं महार्घंगुणग्तमहाणेवाय ।

तुभ्य ददामि कुमुमेविशदाक्षतैश्व ॥

(श्री अरहन्त्रभगवानको अधु च्ढावे)

जन्मोत्सवादि समयेषु यदीयकं ति।

सेंद्राः सुराः प्रमदमारस्ताः स्तुवन्ति ॥

तस्याप्रतो जिनपतेः परया विशुद्धचा ।

पुरंपांजिल मलयजाईमुपाक्षिपेऽहम् ॥

- इति पुष्पांजिलः -

बध्युज्ज्वलाक्षतमनीहर्गपुष्पदी पैः

पात्रापितं प्रतिदिनं महतादरेण।।

त्रेलोक्यमंगलसुखालय! कामादाह-

मारातिकं तव विभारवतारयामि ॥

- इति मंगलआरती अवतरण -

यं पांडुकामलेशिलागतमादिदेव--

महंनावयन्युरवराः सुरशैलंपूहिन ॥

कल्याणमीप्सुरहमक्षतंतोयपुर्<del>ष</del>ः

सन्भावयामि पुर एव तदीयविबम् ॥

( इति श्रीजिन्बिक्स्यापनम् )

सत्पल्लवः चितमुखान् कलधीतरीप्य--

तामारक्टघटिनान् पयासा सुपूर्णान् ॥

संवाहचतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान् ।

संन्यापयामि कलशान् जिनवेदिकाते ॥

- इति कलशस्थापन् -

आभि: पुण्याभिरेद्भिः परिमलब्हुलेनामुना चन्दर्नन, श्रीदृवपेयेग्मीभिः श्रुचित्रदक्षचयेरुद्गमैरेभिरुद्धैः। हृद्यरेभिनिवेद्यमेखभवनिमेदीपयद्भिः प्रद पैः, ध्पैः प्रायोभिरेभिः पृथुभिरेपि फलेरेभिरोशं यजामि ॥

- इति अर्थम् -

### पंचामृताभिषेक दूरावनम्रसुरंनाथिकरोटकोटी-

संख्या जर्ले जिनपति बहु श्राभिषिचे ॥

अन्दी श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंग वृषभादिवर्धमानांत

अन्दी श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंग वृषभादिवर्धमानांत

चतुर्विशतिती र्थंङ्करपरमदेवं आद्यानाम् आद्ये जम्बू द्विपे भरतक्षेत्र

आर्याखण्डे देशे नाम्नि नंगरे एतद् जिनचैत्यालये सं० मासोत्तमे मासे पक्षे तिथौ बाँसरे

पौर्वान्हिकसम्ये मृनिआयिकाश्रादकशाविकानाम् संकल कर्मक्षयार्थं जलेनाभिष्वे नमः।

इति जलस्नपनन्।
सुस्निग्धैर्नवनालिकेरफलजैराम्नाटिजातेग्तथा।
पुण्ड्रैक्वादिमम्द्विवच गुरुभिः पापापहैर्रजसा॥
पीयूषद्रविश्वसिर्मः सज्ज्ञानसंप्राप्तये।
सुस्वादैरमलैरसं जिन्नविभुं भनस्यानघं रनापये॥
कि न्हीं
इति रसस्नपनम्।

न। लिकेरजलैः स्वन्छैः शोनैः पूर्तर्मनोहरैः स्नानिकपां कृत। यस्य विदवे विश्वदर्शिनः ॥

किं व्ही

इति नालिकेररसस्न गनम्।

सुपक्वैः कनकच्छायैः सामोदैर्मोदकादिभिः। सहकाररसैः स्नानं कुर्नः शर्नेकसद्मनः।

किं= व्य

इति आम्ररसस्नपनम्।

मुक्त्यंगनानमंविके यंमाणैः विष्टार्थकर्तूररजोविलाहै । माधुर्यधुर्यैर्वरदार्करौधे मंक्त्या जिनस्य स्नपनं करोमि ॥

िंड व्य

इति शर्करास्नपनम्।

भत्त्या ललाटतदेटशनिवेशितोच्वं:

हम्तेश्च्युताः सुरवराऽसुमर्त्यरनार्थः।

तत्कालवीलितमहेक्षुरसस्य धारा

सद्यः पुनातु जिनविम्बगतंत्र युष्मान् ॥

क्षें न्हीं

इति इक्षुरसस्नपनम्।

उत्कृष्टवर्णनवहेमरसागिराम-

देहत्रमावलयसंगमलुप्तदीप्तिम् ॥ धारां घृतस्य शुभगन्त्रगुणानुमेयां

बन्देऽईतां सुरभिसंस्नपनोपशुक्ताम् ॥

क्षं न्ही

इति घृतस्नपनम्।

सम्पूर्णशारदशशांकमरीविजाल-स्पन्देरिवात्मयशसामिव सुप्रवाहै: ॥ सीर्रेजिनाः शुवितरंरिभिषिच्यमानाः सम्पादयन्तु मम चित्तसमीहितानि ॥

ॐ न्हीं

इति दुग्धस्नपनम् ।

दुष्धाब्धिबीविचयसंचितकेनराशि— पांडुत्वकांतिमवद्यारयनामतीव ॥ दध्नां गता जिनवतेः प्रतिमां सुद्यारा

सम्पद्यतां सपदि वाञ्च्छितसद्धये वः ॥

ॐ ऱ्ही

इति दिवस्नपनम

संस्तावितस्य घृतदुग्धधीक्षुवाहैः
सर्वाभिरौषधिभिरहेत उज्ज्वलाभिः।
उद्घतितस्य विद्धाप्यभिषकमेलाकालेयकुंकुमरसोत्कटवारिपूरैः॥

रुं सी

इति सर्वे।षिदनपनम् ।

कर्प्रबूलिमिलितैः घनसारपंकः
सम्मिश्रितः कमलतन्दुलिपडिपिडैः ।
उद्धर्तनं भगवतो वितनोमि देहस्नेहोपलेपकलनापरिलोपनाय ॥
इति चन्दनादिना उद्धर्गनं करोमि स्वाहा ।

संशुद्धशुद्धचा परया विशुद्धचा, कर्पुरसम्मिश्रितचन्दनेन।

जिन्द्रदेवासुरपुरपवृद्धिः विलेपन चारु करोमि भव या ।। इति चन्दनादि लेपनं करोमि स्वाहा। बासन्तिकाजातिशिरीयवृन्दै-वैध्कव् देरिव चम्पकार्यः । पुःपैरने हैरलि मिहुताग्रैः, धीमिजनेन्द्रां चिष्णं यत्रेऽहं ॥ इति पुष्पवृद्धि करोमि स्वाहा। इप्टेमेनोरयशनीरय भरवपुंतां पूर्णेः मुबर्ग र लग्नीनित्य वैसानै: । र्मसारसागरविलंघन, तुसेत्-माप्लावये त्रिगुकवनेगति जिनेंद्रम्

क सी

口切

इति चतु.कोणकरूपस्नपनम् ।

द्रस्वैरमस्वयमसारसनुःसमाधे-रागोऽवासितमसन्तिऽगंतरालेः निर्योक्तिन प्रयमा जिनपुष्टगवानां के जोबपपावनमहं स्नपनं करोमि ॥ इति गुगन्धितमलस्नपनम् ।

## अय शांतिमंत्र प्रारम्यते।

**→>>>>®**<<**←**<<<<

ॐ नमः सिद्धेभ्यः । श्री वीतरागाय नमः ॐ नमोऽ-हिते भगवते, श्रीमते पाइवंतीर्थंकराय द्वादशगणपरवेष्ठिताय ज्ञुक्लध्यानपवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयभुत्रे, सिद्धाय, बुद्धाय, पर-मात्मने, परमसुखाय, त्रेलोक्यमहीव्याप्ताय, अनन्तसंसारचऋपरि-मर्दनाय, अनन्तदर्शनाय, अनन्तवीर्याय, अनन्तमुखाय, सःयज्ञ म्हणे, धरणेंद्रफणामण्डनमिडताय ऋष्यायिकाभावकभाविकाप्रमुख-चतुःसंघोषर्गविनाशनाय, घातिकर्मविनाशनाय, अघातिकर्म-विनाशनाय, अपवायं छित्रि छिधि मित्रि मिधि, मृत्युं छिधि छिधि मिधि मित्रि, अतिकामं छिवि छिवि मिधि २। रतिकाम छिधि २ मिधि २। कोव छिधि २ मिधि २। अग्नि छिधि २ मिधि २। सर्वजुर्वे छिति २ मिधि २। सर्वीयसर्ग छिधि २। सर्वविष्टनं छिन्दि ? । सर्वभय छिधि २ मिधि ? । सर्वचीरभय छिघि २ मिधि २। सर्वदुष्टभयं छिबि २ मित्रि २। सर्वम्ग-मयं छिधि २ मिधि २। सर्वमात्मचक्रम्य छिधि भिधि २। सर्वरपमन्त्रं छिबि २ मिथि २। सर्वगूलरोगं छिबि २ भिधि २। सर्वक्षयरोगं छिधि २ मिधि २। सर्वकुष्ठरोगं छिधि २ भिधि२। सर्वेक्र्ररोगं छिधि २ भिधि २ । सर्वेनरमारी छिधि २ भिधि।

क्ष्र गुरु । सवजनाननस्यन कुरु गुरु । सर्वभयानयनं गुरु हुरु । सर्वभो हुनानस्यनं गुरु गुरु । सर्वभ्रमनगर संदर्भदेदमद्यपस नद्रोणमुणस्याहानस्यनं गुरु २ । सर्वसंभानन्तरं संदर्भदेदमद्यपस नद्रोणमुणस्याहानस्यनं गुरु २ । सर्वसंभानस्यनं गुरु कुरु । सर्व बेगानस्यनं गुरु कुरु । सर्वयज्ञमानानस्यनं कुरु कुरु । सर्वदुःस्य हन, हन, दह, दह, प्या, प्या, कुट, कुट, दो स्र सीस्र ।

यत्मुख त्रिषु लोकेषु व्याधिव्यंसनवित्रसं । समयं क्षेममारीग्यं ग्यम्तिरम्तु विधीयते ॥

शिवमन्तु । कुलगायधनत्रान्यं सदास्तु चन्द्रवमयामुपूरय-मल्लियर्द्धमान पुष्पदन्त हो त रु मुनिसुयत नेमिनाय पाइवैनाय इत्येष्यो नमः । इत्यनेन मन्त्रेण नवप्रहार्यं गन्धोदकधारावर्षंणम् । , ओं नमः शांति जिनेशिने

# अथ महाशांतिमंत्र

**->>→>** 

शार्द्छ:- श्रीखण्डोद्भवकदमैः सुरुचिरः वर्पूरचूर्णैनितै:।

संमिश्रेरतिगन्धिभनंदनदीकामारक्पादिभिः।। पाथोभिः परिपूरितेन कलशैनन्तिस्थतैनिःमनां।

शान्त्यर्थं महाशांन्तिमत्रपटलंदेंवं जिन स्नापये ॥ १॥

गद्य:- ॐ कर्ष्रकादमोरागुरु गलयज्ञादिक्षोदन्यामिश्रीत-

गिरतस्वर्णरेणूयमानकजिन्जन्कपुंजिपिजरितैविजितविलसद्विला-

सिनीविलोललोचननीलनीरजजलदपरिपूरितः परिपूरितसकल

जगद्घाणविवरबन्धुरसौगन्द्ध्यै: ।।

वसंत-अन्धीकृतालिभिरभिष्टुत हेपकुम्म-।

संघारितैविजितदिग्द्वियदानगन्वै-।।

र्बन्धुप्रभुं भवमृतां हतघातिवन्त्रम् ।

गन्धौदकंजिनपति स्नपयामि ज्ञान्त्ये ॥ २ ॥

ॐ न्हीं श्रीं क्लीं ऐं अई वं म हं सं तं प वं २ म २ हं २ सं २ तं २ पं २ झं २ झ्वीं क्वीं द्वां २ द्वीं २ द्वावय २ नमो-ऽईते भगवते श्रीमते ॐ न्हीं क्षों ( + देवदत्त नामधेयस्य ) पापं खण्ड २ हत २ दह २ पच २ पाचय २ कुट २ जी झं

<sup>+</sup> यहां महाशांति करा नेवाले व्यक्तिका नाम लेवें।

२ अहं झ ह्वीं ह्वीं हं सः झं वं व्हः पः हः क्षां कीं झूं कें कीं कीं कों कों कों कों न्हां न्हीं न्हें न्हें न्हें न्हें न्हां न्हीं द्रों द्रों द्रों द्रों द्रों द्रों द्रों द्रों द्रों द्रां द्रों द्रां द्रों द्रां व्रावय २ नमोऽहंते भगवते श्रीमते ठ ठ ठ ठ ( ह देवदत्त नाम-धेयस्य) श्रीरस्तु । सिद्धिरम्तु । वृद्धिरम्तु । तुष्टिरस्तु । ज्ञांति-रस्तु । कांतिरस्तु । कल्याणमस्तु स्वाहा ॥

🕉 निखिलभुवनमवनमगलीभूतजिनपतिसवन समयस-**यरमभिनवकर्पूरकालागरुकुंकुमहरिचन्दनाद्यनेक** सुगन्त्रिबन्धुरगन्धद्रव्यसम्भारसम्बन्धबन्धुरमिललदिगन्तराल -व्याप्तसीरभातिशयसमाकृष्टसमदसामजकपोलतलविगलित नद--मुदितमधुकरनिकराहंत्परमेश्वरपनित्रतरगात्रस्पर्शंनमात्रपवित्री-भूत - भगवदिदं गन्त्रोदक्धारावर्षमशेषह्वैनिवन्त्रनं भवतु ( ० देवरत्त नामधेयस्य ) शांतिः करोतु कान्तिमाविष्क रोतु । कल्याणं प्रादुःकरोतु । सौभाग्यं सन्तनोतु । आरोग्य-मातनोतु । सम्पदं सम्पादयतु । विपदमवसादयतु । यशो विका-सयतु । मनः प्रसादयतु । आयुद्रीघयतु । श्रियं इलाघयतु । शुद्धि विशुद्धयतु । बुद्धि विवर्धयतु । श्रेयः पुष्णातु । प्रत्यवायं मुष्णातु अनिभमतं निवारयतु । मनोरथं परिपूरयतु । परमोत्सवकार-णिवदं। परममंगलिमदं। परमप।वनिमदं स्वस्त्यस्तु नः। स्वस्त्यस्तु वः । इवीं क्वीं हं सः असिजाउसा स्वाहा ।।

<sup>#, 0, -</sup> यहां जिसके लिए शांति करे उनका नाम लेवे।

विनाशनाम अब्दमहाप्राप्तिहायंसहिताय चतुन्तिश्व दितायसमे—
ताय। अनन्तदर्श्नज्ञानवीर्यसुखात्मकाय। अब्दादशदोषरिहतःय।
पच्चमहाकल्याणसम्पूर्णाय। नवकेवलिधसमिन्वताय। दशविशेषणसयुक्ताय। देवाधिदेवाय। धर्मचक्राधीक्वराय। धर्मोपदेश—
न कराय। चमरवैरोचनाच्युतेन्द्रप्रभृतीन्द्रशतेन मेक्गिरिशिखर—
शे नरीभृतपाण्डुकशिलातलेन गन्धोदकपरिरिपूरितानेक-विचित्र
मिण ग्यमंगलकलशेरिभिभिषिक्तमिदानीमहं त्रेलोक्येश्वरमई—
सारमेव्डिनमिभषेत्रयानि हं झहवी क्ष्मी हं सः द्रो द्री ए वर्ह
नहीं क्ली ब्लूं द्रां द्री द्रावय २ स्वाहा॥ (आगंके मत्रोमे
क्रमसे जलगंधादि अब्दिवधद्रव्य अर्पण करें)

क न्हीं श्र.तादकप्रदानेन श्रीत्लो भगवान् प्रसिदंतु वः ।
श्रीता आपः पान्तु । शिवमाग्ङ्ल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥ १ ॥
क गन्त्रोदकप्रदानेन अभिनन्दनो भगवान् प्रसीदतु । गन्धाः
पातु । शिवमग्ङल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥ २ ॥ क अक्षतोदक
प्रदानेन अनतो भगवान् प्रसीदतु वः । अक्षताः पान्तु । शिव—
भगवान् प्रस दतु । पुष्पणि पान्तु । शिवमाग्ङल्यतु श्रीमदस्तु वः ॥ ३ ॥ अ पुष्पोदकप्रदानेन पुष्पदन्तो
भगवान् प्रस दतु । पुष्पणि पान्तु । शिवमाग्ङल्यतु श्रीमदस्तु ।
पौयूषपिण्डः पान्तु । शिवमाग्ङल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥ ५ ॥
अ दीपप्रदानेन चन्द्रप्रभो भगवान् प्रसीदतु कर्पूरमाणिक्यदीपाः
पान्तु । शिवमाग्ङल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥ ६ ॥ धूपप्रदानेन
धर्मनेमिनायो भगवान् प्रसीदतु । गुग्गुलादिदशाग्ङध्रपाः पातु ।

शिवमाग्डल्यन्तु श्रीमदम्तु वः ॥ ७॥ फलग्रदानेन पार्श्वनाथो भगवान् प्रसोदतु। क्रमुक-नारिग-प्रभृतिफल्यनि पान्तु । जिल्न माग्डल्य तु श्रीमदम्तु वः ॥ ८॥ ॐ अर्हन्तः पान्तु वः । सद्धमं-श्रीबलाय्रारोग्यंश्वयांभिनृद्धिरम्तु वः ॥ मिद्धाः पान्तु वः । हृदयनिर्वाण प्रयन्छन्तु वः ॥ आचार्याः पान्तु वः । श्रीतलसीग-ध्यमस्तु वः ॥ उपाध्यायः पन्तु वः । सीमनस्यं चास्तु वः ॥ सर्वसाधवः पण्नु वः । अञ्चदानतपोवीयंविज्ञानमस्तु वः ॥ (आगके मंत्रोंसे २४ बार पुष्प अर्पण करें )

ॐ वृषमस्वामिनः भेपादपद्मप्रसादात् अष्टिविधकमं विनाश्वानं चास्तु वः ॥ १ ॥ ॐ श्रीमदिजितनायम्वामिनः श्रीपाद—
पद्मप्रसादाद्रज्ञेयशित्तर्भवनु वः ॥ २ ॥ ॐ शम्भवस्वामिनः
श्रीपादपद्मप्रसाद दनंकगुणगण श्वाम्तु वः ॥ ३ ॥ ॐ अभिनदनस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादिभमतफल प्रयच्छन्तु वः ॥ ४ ॥
ॐ सुमितम्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादमृनं पवित्रं प्रयच्छन्तु वः
॥ ५ ॥ ॐ पद्मप्रभरवामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादमृनं पवित्रं प्रयच्छन्तु वः
॥ ५ ॥ ॐ पद्मप्रभरवामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाद्यां प्रयच्छन्तु
वः ॥ ६ ॥ ॐ सुपद्दंस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाचनन्द्राकं—
प्रतेजोऽस्तु व. ॥ ८ ॥ ॐ श्रीचद्रप्रभरदामिः श्रीपादपद्मप्रसादाचनन्द्राकं—
प्रतेजोऽस्तु व. ॥ ८ ॥ ॐ प्रदादंनस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्
पुष्प गयकातिशयोऽस्तु वः ॥ ९ ॥ ॐ श्रीतश्रस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादशुमक्रमंमलप्रक्षालनमस्तु वः ॥ १० ॥ ॐ श्रेयांस—
जिनस्तामिनः श्रीपादपद्मप्रादात् श्रेयस्करोऽस्तु वः ॥ ११॥

ॐ वासुपूज्यस्वामितः श्रीपादपद्मत्रसादाद्रत्नत्रयावासंकरोग्तु दः ॥ १२ ॥ ॐ विमलस्वामिन श्रीपादाद्यासादात् सद्धर्मवृद्धिवी चान्तु वः ॥ १३ ॥ ॐ अनन्तनायम्वामिनः श्रीपाद । चत्रसाददनेकधनाधान्याभितृ द्विरक्षणमस्तु वः ॥ १४ ॥ क्ष्रं धर्मनाथस्वामिनः श्रीपदपद्मत्रसादात् शर्मप्रचयोऽन्तु वः॥१५॥ अभिवर्ह-परमेश्वरसर्वज्ञ ।रमेष्टिशान्तिनाथस्वामिनः श्रीपाद-पद्मप्रसादात् शान्तिकरोऽस्तु वः ॥ १६॥ ॐ कुंथुनाथम्वामिनः श्रीपादपद्मा सदात्तत्रामिवृद्धिकरोऽन्तु वः ॥ १७॥ ॐ अरजिन स्वामिनः श्रीपादपद्म ग्रसादात् गरम र त्याणपरम्पराऽस्तु वः ॥ १८॥ ॐ मिल्हनाथस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाच्छल्यविमोचनं करोऽन्तु वः ॥ १९ ॥ ॐ मुनिसुव्रतस्वामिनः श्रीप दपद्म गसादात्सम्यग्दर्शन चास्तु वः ॥२०॥ॐनिमनथस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादःसम्यग्जानं चास्तु वः ॥ २१ ॥ ॐ अरिष्टनेमिस्वः श्रिनः श्रीपादपमद् ।सा-दात् अक्षयं चारित्रं ददातु वः ॥ २२ ॥ ॐ श्रीमःपार्श्वभट्टारक-स्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्सर्वविष्टनविनाशनमन्तु वः ॥ २३ ॥ 🍑 श्रीवर्धमानस्वामिनः श्रीपाद्मप्रसादात्सम्यग्दर्शनश्चष्टगुण-विशिष्ट चास्तु वः ॥ २४॥

श्रीमद्भगवदर्हसर्वज्ञ परमेष्ठी - परम - पित्र - झांति-भट्टारक स्वापिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्सद्धमंश्रीबलायुरारोग्यै रवर्णाभवृद्धिरस्तु। वृषमायदो महति महाबीर वर्धमान पर्यन्तः परम ते थंकरदेवाइचतुविशितरहंन्तो भगवन्तः सर्वज्ञाः सर्वदिशितः सिम्भन्नमनस्का वीतरागद्वेषमोहास्त्रिलोकनाथा स्त्रिलोकमहिता स्त्रिलोकप्रद्योतनकरा जातिजरामरणिव ममुक्ता सकलमञ्यजनसः मूहकमलवनसम्बोधनकराः । देवाधिदेवाः । अनेक गुणगणशत—सहस्रालङ्कृतदिव्यदेहधराः । पंचमहाकल्याणाष्टमहाप्रातिहार्यः चतुन्त्रिश्चदिव्यदेहधराः । पंचमहाकल्याणाष्टमहाप्रातिहार्यः चतुन्त्रिश्चदिव्यसमानमञ्चवरपुण्डरोकपरमपुरुषमृकुटतटनिविडनिव - स्मणिगणनिकरवारिधारामिषिकतचारुचरणकमल्युगलाः । स्विशिष्यपरिष्ठियवर्गाः प्रसीदन्तु वः ॥ परममाङ्गल्यनामधेयाः । स्वक्षिण्यपरिष्ठिवहामुत्रं च सिद्धाः सिद्धि प्रयच्छन्तु वः ॥

ॐ नृपतिशतसहस्रालङ्कृतसावंभीमराजाधिराज परमेरवरबल्देवनामुदेवमण्डलीकमहामण्डलीकमहामात्यसेनानाथ राज
श्रेिक पुरोहिताधीशकरांजिलनिमतकरकुङ्मलमुकुलालङ्कृतपादपद्माः । कुलिशनालरजत मृणालभन्दारकणिकारातिकुलिगिरि
शिखरशेखरगगनमन्दाकिनीमहान्हवनदनदीशतसहस्रदलकम् -वासिन्यादि सर्वाभरणभूषिताङ्गसकलमुन्दरीवृन्दवन्दितचारचरण मलयुगलाः ।। ओं आमीषधयः । क्ष्वेलीषधयजल्लीषधयः ।
विश्वोषधयः ।भिनिबोध-सर्वेषधयश्च वः श्रीयन्ताम् २॥ ॐ कोष्ठकृदिबीजवृद्धिपदानुसारि ! वृद्धिसभिन्नश्रीवश्चवण्यः वः

बुद्धिसम्मिन्नश्रोत्रश्रवणाश्च व. प्रीयन्तास् २ ॥ ॐ जलचारण-जंत्रचारणतंतुचारणभूमिचारणपुष्पचारणश्रेणीचारणचतुरङ्गुल-चारणक्षाकाञ्चारणाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ ॐ मनोबलिवचोबलि कायबलिनश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ ॐ उग्रतपे व प्तपोमहातपोघोर-तपोऽनुतपोमहोग्रतपश्च वः प्रीयन्ताम् २।। ॐ मतिश्रुताय-धिमनःपर्यय नेवलज्ञानिनश्च वः प्रीयन्ताम ॥ यसवरुणक्ष्वेर-वासवाश्च वः प्रीयन्ताम् ।। ॐ अनन्तवासुकीतक्षककर्कीटकपद्म... शखपालकुलिशजयविजयादिमहोरगाश्च वः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ इंद्रा-ग्नियमनैर्ऋतवरुणवायुकुबेरईशानधरणेंद्रसोमादचेति दशदिदपाल काश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ अों सुरासुरोरगेन्द्रचमरचारणसिद्धः-विद्याधरिक सरकिम्पुरुषगरुडगन्ध वंयक्षराक्ष सभूतिपशाचादच व प्रीयःताम् २ ॥ ओं बुधशुक्रबृहस्पत्यर्केन्दुशनैरचराङ्गा-रकराहुकेतुतारकादिमहाज्योतिष्कदेवाश्च यः प्रीयन्ताम् २ ॥ ओं चमरवैरोचनधरणानन्दभूतानन्द वेणुदेव वेणुधारि पूर्णवसिष्ठ जलकान्तजलप्रभुघोषमहाघोषहरिषेणहरिकान्त अमितगतिअमि तबाहनवेलाञ्जनप्रभञ्जन अग्निशिखअग्निवाहनाःचेति विश्वति-भवनेन्द्राध्य वः प्रीयन्ताम् २ ।। ओं गीतरति गीतकान्तसत्पुरुष-सुरूपप्रतिघोषपूर्णभद्रमाणिभद्रपुरुष चूलभीममहाभीमकालमहा-

कालाश्चेति षोडशब्यन्तरेन्द्राश्च वः ग्रीयन्ताम् २।। ओं नामि राजजितशत्रृहृढराज व्यववरमेघराजधरणराजसुप्रतिष्ठमहासेनः-सुप्रीषदृहरथविष्णुराजतसुप्रच्यक्ततवमं सिहसेनमानुराजविश्वसेन • सुदर्शनकुम्भराजसुनित्रविजयमहाराजसमुद्रविजयविश्वसेन सिद्धाः र्थाश्चेति जिनजनकाश्च च. प्रीयन्ताम् २ ॥ॐमरुदेवीविजयासुषेणाः सिद्धार्थापुनङ्गलासुनीमापृथ्वीलक्ष्मणाजयराम।सुनन्दाविपुलान -न्दाजयावतो आर्यश्यामालक्ष्मीमतिमुत्रभाऐर।देवीश्रीकांतामित्रसे -नात्रभावती सोमार्वापलाशिवदेवं बाम्ही त्रियकारिण्यश्चेति जिन-थातृ हारच वः प्रीयन्ताप् २ ।। ॐ गोमुखमहायक्षत्रिमुखयक्षेर्ररः तुम्बरकु पुमवरनन्दिविजयअजितब्रम्ह ईश्वरकुमारषण्युख पाता। लिक्सरिकम्युच्यगरुडगन्धवं महेन्द्रकुव स्वरुणविद्यु = मसर्वाण्ह --धरणेंद्रमातङ्गनामाश्चेति चतुर्विशतियक्षाश्च व. प्रीयन्ताम् २।-चकेश्वरीरोहिणीप्रज्ञप्तिवज्यशृंखलापुरुषदत्तामनोबेगाका -लीज्वाज्ञामालिनीमहाकालीमानवीगौरीगान्वारीवैरोटीअनन्त --मतिमानसी महामानसोजयाविजयाअपराजिताबहुरूपिणीचामुं-द्वीक्षुव्माण्डीपद्मावतीतिद्वायिन्यश्चेति चतुर्विश्वतिजिनशा-सनदेवताइच वः प्रीयन्ताम् २ ॥ ॐ कुङगिरिशिखरशेखरीभूत-महान्हदादिनरोवरमध्यस्थितसहस्रदलकमलवासिन्यो मानिन्यः सकलसुन्दरीवृन्दवन्दितपादकमलाइचं देव्यो वः 'प्रीयन्ताम् २ ॥ 🕸 यक्षवैश्वानरराक्षत्तनधृतपन्नगअसुर सुकुमारपितृविश्वमालिनी

चमरवैरो वनमहाविद्यामारविद्ववेश्वरपिण्डाज्ञनाश्चेति पंचदशति-थिदेवतारच वः प्रीयन्ताम् २ ॥ ॐ हिन्ठिमहिन्ठिम हिन्ठिम-मज्ज्ञम हिठ्ठभोपरिम मज्ज्ञमहिठ्ठिम मज्ज्ञममज्ज्ञम मज्ज्ञमो-परिम उपरिमहिठ्छिम उपरिममज्झम उपरिमोपरिमाश्चेति नव-ग्रंवेयकवासिनोऽहमिन्द्रदेवाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ ४४ अर्च्य क्षच्चं पालिनीवेरोचनसोमशोमरूपाङ् **हास्फःटिकः दिस्यादि नवान्**-दिशवासिनश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ 🕸 विजयवैजयन्तजयन्त-अपराजितसर्वार्थिसिद्धिनामधेय पंचानुत्तरित्रमानवासिनइच वः प्रीयन्ताम् २ ॥ ॐ अतीतानागतवर्तमानविकल्पानेकविविध -गुणसम्पूर्णाध्टगुणसंयुक्ताः सकलसिद्धसम्हादच वः प्रीयन्ताम् २ ॥ 🕉 सर्वकालमि ( \* देवइत नामधेयस्य ) सम्पत्तिरस्तु । सिद्धिरस्तु । वृद्धिरन्तु । तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । शान्तिरस्तु । कान्तिरस्तु। कल्याणमस्तु। सम्पदस्तु। मनःसमाधिरस्तु। भेयोऽभिवृद्धिरस्तु । ज्ञाम्यन्तु धोराणि । ज्ञाम्यन्तु पापानि । पुण्यं वर्धताम् । धर्भो वर्धताम् । आयुर्वर्धताम् । कुलं गोत्र चाभिवर्वताम् । स्वस्ति भद्रं चास्तु वः । ततो भूयोभूयः श्रेयसे ।। 🕉 हीं स्वी क्वीं हं स: स्वरत्यस्तु व.म्बरत्यस्तु मे स्वाहां ।।ॐपुण्याहं २ प्रीयन्ताम् २ ॥ भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञः सर्वर्शेशनः सकलकीयिः

<sup>#</sup> यहां जिसके लिए शांति करे उसका नाम् लेवे।

**स**कलमुखास्त्रिलोकेशास्त्रिलोकेश्वरपूजितास्त्रिलोकना**या**स्त्रिलोक महितास्त्रिलोकप्रद्योतनकराजातिजरामरणविप्रमुक्ताः विदश्च ॐ श्री न्हीधृतिकीतिबुद्धि लक्षम्यश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ ३४ वृषभादिवर्धमानान्ताः शान्तिकराः सकलकर्मरिपु-कान्तारदुर्गविषमेषु रक्षन्तु मे जिनेंद्राः । श्यसोमाग्ङारक बुघबृहस्पतिशुक्रश्चनैश्चर राहुकेतुनामनवग्रहाश्च **षः** प्रीयन्ताम् २।। ॐ तिथिकरणनक्षत्रवारम्हूर्तलग्नदेवाश्च इहा-न्यत्र ग्रामनगराधिदेवताइच ते सर्वे गृरुभवता अक्षीणकोशकोष्ठा-गारा भवेयुदानतपोवीर्यधर्मानुष्ठःनादि नित्यमेवास्तु । मातृ-वितृभातृपुत्रपौत्रकलत्र गुरुसुहृत्स्वजनसम्बधिवन्धुवर्गसहितस्या-स्य यजामानस्य ( + देवदत्तनामधेयस्य ) धनधान्यै दवयं चृतिबल-यश.कीतिबुद्धिवर्धनं भवतु सामोदप्रमोदो भवतु । शांतिर्भवतु कान्तिभवतु । तुष्टिभवतु । पुष्टिभवतु । सिद्धभवतु । अविध्नमस्तु आरोग्यमस्तु । आयुष्यमस्तु । भूभं कर्मास्तु । कर्मसिद्धिरस्तु । शास्त्रसमृद्धिरस्तु । इष्टसपदस्तु । अरिष्टनिरसनमस्तु । धन-धान्यसमृद्धिरस्तु । काममाग्ङल्योत्सवाः सन्तु । शाम्यन्तु घोराणि शाग्यन्तु पापानि पुण्यं वर्धताम् । धर्मी वर्धताम् । श्रीवर्धताम् । क्षायुर्वर्धताम् । कुलं गोत्रं चामिदर्धताम् स्वस्ति भद्रं चास्तु वः स्वस्ति भद्रं चास्तु नः। इवीं ६वीं हं सः स्वस्त्यस्तु ते स्वस्त्यस्तु मे स्वाहा ॥

<sup>+</sup> यहां जिसके लिए ज्ञान्ति करे उसका नाम लेवे।

अ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्याद्वतीर्थङ्कराय श्रीमद्रत्नत्रयालङ्कृद्धाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणपरिवेष्ठिताय शुक्लध्यानपवित्राय सर्वज्ञाय स्वयमभ्वे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रिलोकमहिताय । अन-न्तसंसारचऋपरिमर्दनाय । अनन्तज्ञानाय । अनन्तदर्शनाय । अन-न्तवीर्याय । अनन्तसुखाय । सिद्धाय बुद्धाय । त्रेलोक्यवशकराय सत्यज्ञानाय । सत्यब्रम्हणे । धरणेन्द्रफणामण्डलमण्डिताय । उप सर्गविनाशनाय। घातिकर्मक्षयंकराय। अजराय। अमराय। अभवाय । ( - देवदत्तनामधेयस्य ) मृत्युं छिद २ भिद २।। हन्तुकामं छिंद २ मिंद २ ॥ रतिकाम छिंद २ भिंद २ ॥ विलिकामं छिद २ भिंद २।। क्रोधं छिद २ भिंद २।। पाप छिंद २ मिंद २ ॥ वैरं छिंद २ मिंद २ ॥ वायुधरण छिद २ भिंद २।। अग्निभयं छिद २ भिंद २।। सर्व शत्रु-भयं छिंद २ मिंद २।। सर्वोपसर्ग छिंद २ भिंद २।। सब विष्नं छिद २ भिद २ ॥ सर्व भयं २ ॥ सर्व राजभय छिद २ भिद २।। सर्व चोरभयं छिद २ भिद २ ।। सर्व दुष्टभय सर्व सर्पभयं छिद २ भिद २।। सर्व वृश्चिकभयं छिद २ भिद २। सर्व ग्रहभयं छिद २ भिद २।। सर्व दोषं छिद २ भिद

<sup>-</sup> यहां जिसके लिए शांति करे उसका नाम लेवे।

२।। सर्व व्याधि छिंद २ भिंद २।। सर्व क्षामडामरं छिंद २ भिंद २।। सर्व परमत्र छिंद २ मिंद २।। सर्वात्मघातं छिंद २ भिंद २ ॥ सर्वपरघात छिद २ भिंद २ ॥ सर्व कुक्षिरोगं छिद २ मिद २ ॥ सर्व शूलरोगं छिद २ भिद २ ॥ सर्वाक्षिरोगं छिद २ भिंद २।। सर्विशारोरोग छिंद २ मिंद २।। सर्वे कुष्टरोग छिद २ भिंद २।। सर्व ज्वररोगं छिंद २ भिंद २।। सर्वे नरमारि छिंद २ भिंद २ ॥ सर्व गजमारि छिंद २ भिंद २ ॥ सर्वाध्वमारि छिद २ भिद २ ॥ सर्वगोमारि छिद २ भिद २ ॥ सर्व महिषमारि छिद २ भिद २ ॥ सर्वाजमारि छिद २ भिद २ ॥ सर्वतस्यमारि छिद २ भिद २ ॥ सर्व धान्यमारि छिद २ भिद २ ॥ सर्वे वृक्षमारि छिन्द २ मिन्द २ ॥ सर्वे गुल्ममारि छिन्द २ भिद २ ।। सर्वलतामारि छिन्द २ भिन्द ।। सर्वपत्र-मारि छिन्द २ मिद २ ॥ सर्वपुष्पमारि छिन्द २ भिन्द २ ॥ सर्व फलमारि छिन्द २ मिन्द २ ॥ सर्व राष्ट्रमारि छिन्द २ भिन्द २ ॥ सर्वदेशमारि छिन्द २ भिन्द २ ॥ सर्व विषमारि छिन्द २ भिन्द २।। सर्व कूररोगवेतालज्ञाकिनीडाकिनीभयं छिन्द २ भिन्द २ ॥ सर्ववेदनीयं छिद २ भिन्द २ ॥ सर्व मोहनीयं छिन्द २ मिन्द २ ॥ सर्वापस्मारं छिन्द २ भिन्द ५ ॥ सर्वेदुर्भग छिन्द २ मिन्द २॥

अ सुदर्शनमहाराजचक्रविक्रमतेजोबलशोर्यवीयंवश कुरु २ ॥ सर्व जनानन्द कुरु २ ॥ सर्व जोवानन्दं कुरु २ ॥ सर्व भव्यानन्दं कुरु २।। सर्व गोकुलानन्द कुर्ह २।। सर्वग्रामनगर-खेडखर्वडमडम्बपत्तनद्रोणमुखजनानन्द कुरु २।। सर्वलोकसर्वदेश-सर्वसन्ववश कुरु २ ॥ सर्वानन्द कुरु २ ॥ हन २ दह २ पच २ पाचय २ कुट २ जी घ्रं २ सर्वं वज्ञमानय हू फट् स्वाहा ॥ यत्मुख त्रिषु लोकेषु । व्याधिव्यंसनवर्जितम् ।। अनु:-अभयं क्षेममारोग्यः स्वस्तिरस्तु विषीयते ।। १ ॥ कल्याणमस्तु कमलाभिमुखी सदास्तु ॥ वसतः दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रसमृद्धिरस्तु ॥ **आरोग्यमस्त्वभिमतार्थफलाप्तिरस्तु** ॥ भद्रं तवास्तु जिनपुड्गव भिक्तरस्तु ॥ २ ॥

शार्व्लः श्रीमज्जैनजना चिनतप्रकटित स्याद्वादरत्नाकरः।
सद्धर्मामृतचन्द्रसुश्रुतकरो लावण्यरत्नाकरः।
मोक्षद्वारकवाटपाटनपदुः प्रध्यानरत्नाकरः।
भौमो भूरि गुणाकरो विजयते योगीन्द्ररत्नाकरः॥
मुक्तिश्रीविनताकरोदकिमदं पुण्यांकुरोत्पादकम्।
नागेन्द्रत्रिदशेन्द्रचक्रपदवीराज्याभिषेकोदकम्॥
स्यात् भक्तानचरित्रदर्शनलतासं वृद्धिसम्पादकम्।
कीर्तिश्रीजयसात्रकं तव जिन स्नानस्य गन्धोदकम्॥

नेत्रद्वन्द्वरुजा विनाशनकर गात्र पवित्रीकरम् । वातोत्पत्तिकफादिदोषरिहतं गात्र च सूत्रं भवेत् ॥ कामालाक्षयकुष्टरोगविषमग्राहक्षयंकारि तत्। श्रीमत्पार्श्वजिनेन्द्रपादयुगलस्नानस्य गन्धोदकम्

#### ॥ इति महाशांतिमंत्र ॥

घातिवातविघातजातिवपुल श्रीकेवलज्योतिषो । देवस्यास्य पवित्रगात्रकलनात् पूतं हित मगलम् ॥ कुर्याद्भव्यभवातिदावशमदं स्वमीक्षलक्ष्मीफलम् । प्रोचद्धर्मलताभिवर्धनमिदं सद्गन्धगन्धोदकम् ।। नि.शेषाभ्युदयोपभोगफलवत्पुण्यांकुरोत्पादकम् । धृत्वा पंकनिवारकं भगवतः स्नानीदकं मस्तके ॥ ध्यातौ विश्वमुनीश्वरेरिमनुतौ प्रेक्षावतामिंचतौ । इन्द्रार्द्यमुँहुर्राच्चतौ जिनपतेः पादौ समभ्यच्चंये ॥७॥ स्नानान्तरमहैतः स्वयमपि स्नानाम्बुशेषा धृतो । वार्गन्धाक्षतपुष्पदामचरुकैदींपैश्च धूपैः फलैः॥ कामोद्दामगजाङ्कुञं जिनपति स्वभ्यच्च्यं संस्तोति यः। स स्यादारविचन्द्रमक्षयमुखं प्रख्यातकीर्तिध्वजः ॥

महाशांतिपुष्पमंत्र: — ॐ नमोऽहिते भगवते श्रीमते प्रक्षीणा गेवदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नम. श्रीशांतिनाथाय शांति—कराय सर्व पापप्रणाशनाय सर्वदिष्टनिवनाशनाय सर्वरोगोपसर्ग विनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रविवनाशनाय सर्व क्षामडामर विनाशनाय ॐ न्हां न्हीं न्हू न्हीं न्हः असिआउसा ( \* देवदत्त नामधेयस्य ) सर्व शांति कुरु २ वषद् स्वाहा ।।

॥ ॐ शांति ३। मगल भूयात् ॥

# श्री अरिहंत पूजा (मराठी)

चिद्र्पं विश्वरूपव्यतिकरितमनाद्यन्तमानंदसांद्रम्। यत्त्राक् तैस्तैविवर्तेव्यंवृतदितपतद्दुःखसौख्याभिमानः। कर्मोद्रेकात्तदात्मप्रतिद्यमलभिदोद्भिन्ननिस्सीमतेजः। प्रत्यासीदत्परीजःस्फुरदिह परमन्नम्ह यज्ञेऽहमाव्हं॥ १॥-

👺 न्हीं विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय श्रीजिनप्रतिमान्ने पुष्पांजील क्षिपेत्।

स्वामिन् संवीषट् कृताव्हाननस्य-तिष्ठत्तेनोट्टवि तस्थापनस्य । स्वं निर्नेक्तुं तं वषट्कार जाग्रत्सानिध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टि।

ॐ न्हीं अहँ श्री परमज्ञम्ह अत्रावतरावतर संवीषट् आव्हाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ( स्वापनं ) अत्र मम सिन्निहितो भव भव वषट् (सिन्निधापनं )

<sup>\*</sup> यहां जिसके लिए शांति करे उसका नाम लेवे।

अप्टक गडगिंसध्वादि संगव नीर । स्वर्णभृगार खनिनचि हीर ॥ जनमजरामृति गार दूर, जिनेंद्रपाद पूजामि भावे करा।। पूजों २ श्री अरिहत देवा । ज्याची शनइंद्र फरितात सेवा । आहे पुण्या धर्माचा ठेवा, जिनेद्र पाद पूजामि भावे करा २ पूजील। जलम्ल ॥ पोत काशमीर केशर आणि शित कर्ष्ट श्रीलंड सानि ।। करि भवश्रमाची हानि, जिनेद्रपाद पुतामि भाषे करा पूजी० चन्दनम्०। गालि कामोदा वासि सुगन्धी, ज्याची मुनताफल कृतसंधी केली अक्षय पदायि बन्दी, जिनेद्रराद पूजामि भावे कर

पुत्री० अज्ञतान् ॥

नाग चपा चपक चमेली, मन्द मंदार पुष्प बहू मेली।। काम विध्वन्स सहिली, जिनेंद्र पाद पूजामि मावे करू

पूजी॰ पुष्य ।

घत घेबर साखर पूरी गव्य मिष्टान्न मिश्रित खीरी ।। ज्याने केले क्षुधादिक दूरी, जिनेद्र पाय पूजानि भावे कह पूजी० नैवेद्यं ।

घृत अरूनी दीप प्रजाली, आणि कापूर ज्योति उजाली ॥ महा मोहान्ध तमते टाली, जिनेद्र पाद पूजामि भावे करू पूजीव दीपव।

लेक जिना घी घूप पिगाणी, दश सुगंध वासित वाणि।

अध्दक्षमिची होईल हानी, जिनेंद्रपाद पूजािम भावे करू पूजी धूप।
पूग नारिंग धीफल केले, पिस्ता बादाम अखरोट फले।
तुम्हा होईल फल अढाल, जिनेंद्रपाद पूजािम भावे करू पूजी फल अध्द द्रव्यादि एकत्र जोडी, कर्मबन्धाचे बन्धन तोडी हेमकी तिचे भवस्रम फोडी, जिनेंद्र पाय पूजािम भावे करू पूजी अध्य नि

### ॥ अथ जयमाला प्रारम्यते ॥

बन्दे तानमरप्रवेकमुकुटशोत्तारणप्रस्फुर-। द्धामस्तोमविमिधिताः पदनखा भास्वत्करा रेजिरे ॥ येषां तीर्थकरेशिनां सुरसिरद्वारिप्रवाहेल्लुठ - । द्दिव्यद्देवनितम्बनीस्तनगलत्काश्मीरपूरा इव ।। १ ।। वृषम त्रिभुवनपतिशावन्द्यम्, मन्दरगिरिमिव धीरमनिन्द्यम् बन्दे मनसिजगजम्गराज, राजिततनुमजित जिनराज ॥ २ ॥ सम्भवदुज्ज्जलगुणमहिमान, समवजिनपतिमप्रतिमानं । अभिनन्दनमांनदितलोकं, विद्यालोकितलोकालोक ॥ ३ ॥ सुमति प्रशमितकुनयसमूहं, निर्देखिताखिलकर्मसमूहम्। बन्दे त पद्मत्रभदेवम्, देवासुरनरकृतपदसेवम् ॥ ४ ॥ सेवकस्तिजनसुरतरुपादवीम् प्रणमामि प्रथितं च सुपादवी। त्रिभुवनजननयनोत्पलचन्द्रं, चन्द्रप्रभमपर्वाजततन्द्रम् ॥ ५ ॥ सुविधि विध्यवलोज्ज्वलकोति, त्रिभुवनजनपतिकोतितप्ति । भूतलपतिनुतशीतलनाथं, ध्यानमहानलहुतरतिनाथं ॥ ६॥

स्पष्टानन्तचतुष्टयनिलयं, श्रेयोजिनपतिमपगतविलयं। श्री वसुपूज्यसुतं नुतपाद, भव्यजनप्रियदिव्यनिनादं ॥ ७ ॥ कोमलकमलदलायतनेत्रं, विमलं केवलसस्यक्षेत्रं। निजितकन्तुमनतजिनेश, धन्दे मुक्तिवधूपरमेशं ॥ ८॥ धमं निर्मलज्ञमपित्रम् । धर्मपरायणजनताज्ञरणम् । शांति शांतिकरं जनतायाः भक्तिभरक्रमकमलनतायाः ॥ ९ ॥ कुन्थुं गुणमणिरत्न करण्ड । ससाराम्बुधि तरणतरण्ड ॥ अपरीनेत्रचकोरीचन्द्र । अरपरमं पदविनुतमहेंद्रं ॥ १०॥ उद्धतमोहमहाभटमल्ल । मल्लि फुल्लशरप्रतिमल्ल ॥ सुव्रतमपगतदोषितकायं। चरणांबुजनुतदेविनकायं। ११।। नौमि नमिगुणरत्नसमुद्रं । योगिनिकपितयोगसमुद्रं ।। नीलक्यामलकोमलगात्र । नेमिस्वामिनमेनोदात्रं १। १२ ॥ फणिफणमण्डपमन्डितदेहं । पार्वं निजहितगतसदेह ।। वीरमपारचरित्रपवित्रं । कर्ममहीरुहमूललवित्र ॥ १३॥ ससाराप्रतिमप्रतिबोधं। परिनिष्क्रमणं केवल बोधं॥ परिनिर्वृतिसुखबोधितबोद्यं । सारासारिवचारिववोधं ॥ १४॥ वन्दे मन्दरमस्तकपीठे । कृतजनमाभिषवं नृतपीठे ।। दर्शन तव लिब्बिवकरणं। केवलबोबामृतमवतरणं॥ १५॥ अनणुगुणनिबद्धामर्हतां माघनन्दिवतिरचितसुवर्णानेकपुष्पव्रजानां सभवति जयमालां यो विधत्ते स्वकंठे

प्रियपितरमरश्रीमोक्षालक्ष्मीवधूनाम् ॥१६॥ इसकेवाद जो पूजन करना हो करे। सभी पूजन होनेके वाद णमोकार मंत्रकी अथवा नीचे लिखे मंत्रकी १ माला फेरे। अ न्हां न्हीं न्हूं न्हीं न्हुः असि आ उसा नमः

# देववंदनाविधिः ईर्यापथविशुद्धिः

पडिक्कमामि भंते, इरियावहियाये, विराहणाए अणागुत्ते आइगमणे, णिग्गमणे, ठाणे, गमणे, चकमणे, पाणुग्गमपणे बीजुग्गमणे हरिदुग्गमणे, उच्चार-पस्सवण-खेलसिघाण-वियडिपइठ्ठाव-णियाए, जे जीवा एइदिया वा, वेइदिया वा, तेइदिया वा चडिरिंदि या वा, पिंवदिया वा, णोल्लिदा वा, पेल्लिदा वा, संघिट्टदा वा, सघादिदा वा, परिदाविदावा, किरिंचिछदा वा, लेस्सिदा वा छिदिदा वा, भिदिदा वा, ठाणदो वा, ठाणचकमणदो वा, तस्स उत्तर गुणं, तस्स पायचिछत्त करणं, तस्स विसोही करण जाव अरहताण भयवंताणं णमोकार पज्जुवास करेगि, तावकाय पावकमम दुच्चरियं वोस्सरामि! (९ जाप्य)

### आलोचना

ईयापथे प्रचलिताद्य मया प्रमादा— देकेन्दियप्रमुखजीवनिकायबाद्या । निर्वितता यदि भवेदयुगान्तारेक्षा मिथ्या तदस्तु दुरित गुरुभिन्ततो मे ॥ १ ॥

इच्छामि भंते ! आलोचेउ इरियावहियस्स पुन्वुत्तर दिव्हण पच्छिम चउदिस विदिसासु विरहमाणेण जुगंत्तर दिव्विणा भन्वेण दिठुव्वा ! पमाददोसेण डबडव चरियाए पाणभूद जीवस ताण डबबादो कदो चा कारिदो वा कीरतो वा समणुमणिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कड ।

नमोऽस्तु भगवन् देववदना किर्ण्यामि । सिद्धं संपूर्णभव्यार्थं सिद्धे कारणमुत्तम । प्रशस्तदर्शनज्ञान चारित्रप्रतिपःदकम् ॥ १॥ सुरेन्द्रमुकुटाहिलष्टपादपद्मांशुकेशरम् । प्रणमामि महावीर लोकत्रितयमंगलम् । २ ॥ खम्मामि सव्वजीवाण सव्वे जीवा खमतु मे । मित्ती में सन्वभूदेसु वैर मज्झण केण वि ॥ ३॥ राय बंब पदोसं च हरिस दीण गावप । उस्मुगत्त भय सोग रदिमरदि च वोस्सरे । ४ ॥ हा दुहुकयं हा दुहु चितिय भासिय च हा दुह्हं अतो अतो उज्झमि पच्छत्तावेण वेदतो ॥ ५॥ दृश्वे खेले काले भावे य कदा वराहसोहणयः णिदण गरहण जुली मणवचकायेण पडिकमण।। ६।। समता सर्वभूतेषु सयमः शुभभावना । आर्तरौद्रपरित्यागस्तद्धि सामायिकं मतम् ॥ ७ ॥ भगवन्नमोऽस्तु प्रसीदन्तु प्रभुपादौ वदिष्येऽह एषोऽहं सर्व सावद्य योगाद्विरतोऽिम ।

अथ पीर्चान्हिक देववदनायां पूर्वाचायानुक्रमेण सकलकर्मञ्च गार्थ भावपूजावंदनास्तवसमेत चैत्यभिक्त कायोत्सर्गं करोम्यह।

## सामायिकदंडक

णसो अरहताण णमोसिद्धाण णमो आयिरियाण। णमो उवज्ञायाण णमो लोए सब्बसाहणं॥

चतारि मगल, अरहत मगल, सिद्धमगलं, साहू मगल केविल पण्णत्तो धम्मो मगल। चतारि लोगुत्तमा, अरह र लोगु-त्तमा, सिद्धालोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केविलपण्णत्तो धम्मो लोग्तमा,चलरिसरण पन्वज्जामि,अरहत सरण,पन्वज्जामि सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, केविलपण्णत्तो धम्मो सरण पव्वज्जामि।

अहडज्जदीवदोसमुद्देसु पण्णारसकम्मभूमिसु जावअर-हंताण भयवताणं आदियराण तित्थयराणे जिणाण जिणोत्तमाणं केवलियाण,सिद्धाणं बुद्धाण परिणिणिव्बुदाण अतयडाण पारय-डाण धम्माइरियाण धम्मदेसियाण,धम्मणायगाण,धम्मवरचाउ-रग चक्कविठ्ठण, देवादिदेवाण, णाणाण, दसणाण, चरित्ताण सदा करेमि किरियम्म ।

करेमि भत्ते! सामाइयं सन्त सावज्जजोगं पञ्चक्लामि जावज्जीव तिबिहेण मणसा वचसा कायेण ण करेमि ण कारेमि कीरत पि ण समणूमणामि । तस्स भंते । अइचारं पञ्चक्ला-मि णिदामि, गरहामि, अप्पाण, जाव अरहंताण भयवताण पज्जुवासं करेमि ताव काल पावकम्म दुच्चरियं वोस्सरामि।

# चतुर्विशतिस्तवः

थोस्सामि ह जिणवरे तित्थयरे केविल अणंत जिणे। णर पवर लोयमहिए, विहुयर यमले महप्पण्णे ॥ १॥ लोयस्सुज्जोययरे धम्मं तित्थकरे जिणे वंदे । अरहते कित्तिस्से चउवीसं चेव केवलिणो ॥ २॥ उसहमजियं च वंदे समवमिमणंदणं च सुमीय च पउमप्पहं सुपास जिणं च चंदप्पह वदे ॥ ३ ॥ सुविहि च पुष्फयत सीयलसेय च वासुपूज्य च । विमलमणंतं भयव धम्म सत्ति च वंदामि ॥ ४॥ कुथु च जिणवरिद अरं च मल्लि च सुब्वयं च णर्मि वंदानि रिट्टणेमि तह पास वह्हमाणं च ॥ ५ ॥ एवं मए अभित्युआ विह्यर यमलापहीणजरमरणा। चडवीस पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ।। ६ ।। कित्तिय वदिय महिया एदे लोगोत्तमा जिणा बिद्धा ॥ आरोगगणलाहं दितु समाहि च मे वोहि ॥ ७ ॥ चदेहि णिम्मलयरा आइच्चेहि अहियपयासंता । सायरमिव गंभीरा सिद्धा सिद्धि मम दिसतु ॥ ८॥

### चैत्यभक्तिः

जयित भगवान् हेमाम्भोजप्रचारिवजृंभिता-वमरमुकुटच्छायोद्गीर्णप्रभापिरचुंबितौ ॥ कलुषह्दयामानोद्भ्रान्ताः परस्परवैरिणः। विगतकलुषाः पादौ यस्य प्रपद्य विशक्वसुः॥ १॥

तदनु जयति श्रेयान् धर्म प्रवृद्धमहोदयः। कुमतिविपथक्लेशाद्योऽसौ विपाशयति प्रजाः ॥ परिणतनयास्यांगी भावाद्विविक्तविकल्पितं। भवतु भवतस्त्रात् त्रेधा जिनेंन्द्रवचोमृतं ॥ २ ॥ तदनुजयताज्जैनीवित्तिः प्रभंगतरंगिणी । प्रभव विगमध्रीव्यद्रव्यस्वशावविभाविनी ।। निरुपमसुखस्येंदं द्वारं विघट्च निरर्गलं। विगतरजसं मोक्षं देयान्निरत्ययमन्ययम् ॥ ३॥ अर्हेित्सद्धाचार्योपाध्यायेभ्यस्तथः च साधुभ्यः। सर्व जगद्वंद्येभ्यो नमोऽस्तु सर्वत्र सर्वेभ्यः ॥ ४॥ मोहादि सर्व दोषारिघातकेभ्यः सदाहतरजोभ्यः। विरहितरहस्कृतेभ्यो पूजाहेंभ्यो नमोऽहंद्भ्यः ॥ ५॥ क्षारःयाजेवादिगुणगण सुसाधनं सकललोकहितहेतु। शुभ धामनि धातारं वंदे धर्मं जिनेन्द्रोक्तम् ॥ ६ ॥ मिथ्याज्ञानतमोवृत लोकंकज्योतिरमितगमयोगि । सांगोपांगमजेयं जेनं वचन सदा वंदे ॥ ७ ॥ भवनविमानज्योतिव्यंतरनरलोकविश्वचेत्यानि । त्रिजगदभिवंदितानां वंदे त्रेद्या जिनेन्द्रागां ॥ ८ ॥ मुवनत्रयेऽपि भुवनत्रवाधिपाभ्यच्यं तीर्थकर्तृणां । वंदे भवाग्निशार्यं विभवानामालयालीस्ता. ॥ ९ ॥ इति पचमहापुरुषाः प्रणुता जिनधर्मवचनचैत्यानि चैत्यालयारच विमला दिशंतु बोधि बुधजनेष्टां ॥ १० 📭 अकृतानि कृतानि चाप्रमेय, द्युतिमंति द्युतिमत्पु मंदिरेषु ।

मनुजामरपूजितानि वन्दे प्रतिबिंबानि जगत्त्रये जिनानां ।११।

द्युतिमन्डलभासुरांगयब्दीः प्रतिमा अप्रतिमा जिनोत्तमानां ।

भुवनेषु विभूतये प्रवृत्ता वपुषा प्राञ्जलिरिध्म वन्दमानः ।१२।

विगतायुधविकिया विभूषाः प्रकृतिस्था कृतिनां जिनेश्वराणां ।

प्रतिमाः प्रतिमागृहेषु कान्त्या प्रतिमा कल्मषर्गांतयेभिवन्दे ।।

कथयन्ति कषायमुवितलक्ष्मीं परया ज्ञांतत्त्या भवान्तकानां ।

प्रणमाम्यभिक्षपमूर्तिमति प्रतिक्षपाणि विज्ञुद्धये जिनानां ।१४।

यदिद मम सिद्धभितनीत सुकृतं दुष्कृतवर्तमरोधि तेन ।

नदुना जिनधमं एत भित्तमंवताज्जन्मिन जन्मिन स्थिरा मे ।।

अहंतां सर्वभावानां दर्शनज्ञानसपदां।
कीतंपि व्यापि चंत्यापि यथाबुद्धि विशुद्धये।। १६।।
श्रीमद्भावनवासस्याः स्वयं भासुरमूर्तयः।
विन्दिता नो विधेयासु प्रतिमाः परमां गीतं।। १७॥
यावित्त सित लोकेऽस्मिन् अकृतापि कृतापि च।
तापि सर्वाणि चंत्यापि वन्दे भूयांसि भूतये॥ १८॥
ये व्यन्तरिवमानेषु स्थेयांसः प्रतिमा गृहाः।
ते च संख्यामितकांता सन्तु नो दोषिविच्छिदे॥ १९॥
च्योतिषामथलोकस्य भूतयेऽद्भृतसम्पदः।
गृहाः स्वयंभुवः सित विमानेषु नमामि तान्॥ २०॥
वन्दे सुरितरीटाग्रमणिच्छायाभिषेचनम्।
या. क्रमेणेव सेवन्ते तदर्चाः सिद्धिलव्धये॥ २१॥
इति स्तुतिपथातीत श्रीभृतामहंतां ममः।
चैत्यानामस्तु संकीर्तिः सर्वास्रविनरोधिनी ॥ २२॥

अर्हन्महानदस्य त्रिभुवनभव्यजनतीर्थयात्रिकदुरित-। प्रक्षालनैककारणमितलौकिककुहकतीर्थमुत्तमतीर्थम् ॥ २३ ॥ लोकालोकसुतत्त्व प्रत्य दबोधनसमर्थदिन्यज्ञान-। प्रत्यहवहत्प्रवाह व्रतशोलामलविशालक्लद्वितयम् ॥ २४॥ गुक्लध्यानस्तिमितस्थितराजद्राजहंसराजितससकृत्। म्वाध्यायमन्द्रघोष नानागुणसमितिगुप्तिसिकतासुभगम् ॥ क्षास्यावर्तसहस्रं सर्वं विकचकुसुमविलसल्लतिकम् । दु सहपरीषहाख्यद्रुततररगत्तरंगभंगुरनिकरम् ।। २६।। व्यपगतकषायफेन रागद्वेषादिदोषशैवलरहितम्। अत्यस्तमोहकर्दममितदूरनिरस्तमरण-मकरप्रकरम् ॥२७॥ ऋषिवृषभस्तुतिमंद्रोदेकितनिर्घोषविविधविहगध्वानम् । विविधतपोनिधिपुलिनं सास्रवसवरणनिर्जरानि स्ववणं ।२८। गणधरचऋत्ररेंद्रप्रभृतिमहाभव्यपुण्डरीकै. पुरुषैः । वहुभिः स्नात भवःया कलिकलुषमलापकर्षणार्थमसेयम् ॥२९॥

अवतीर्णवतः स्नातुं ममापि दुस्तरसमस्तदुरित हूर
व्यवहरतु परमपावन मनन्यजस्य स्वभावगभीरम् ।३०।
अताम्रनयनोत्पल सकलकोपवन्हेर्जयात् ।
कटाक्षश्वरमोक्षहीनमविकारतोद्रेकतः ॥
विषादमदहानितः प्रहसिताय मान सदा ।
मुखं कथयतीव ते हृदयशुद्धिमात्यतकीं ॥ ३०॥
निराभरणभासुरं विगतरागवेगोदयात् ।
निरंबरमनोहरं प्रकृतिक्पनिर्दोषतः ॥

निरायुधसुनिर्भय विगतिहस्यहिसाक्रमात् ।
निरामिषसुतृष्तिमद् विविधवेदनानां क्षयात् ॥ ३२ ॥
मितस्थितनखांगजं गतरजोम इस्पर्शन ।
नवांबु छहचन्दनप्रतिमदिच्यगन्धोदयम् ॥
रवोन्दुकुलिशादिदिच्यबहुलक्षणालंकृतं ।
दिवाकरसहस्रभासुरमपीक्षणानां प्रियम् ॥ ३३ ॥
हितार्थपरिपंथिभिः प्रबलरागमोहादिभिः ।
कलितमनाजनो यदिभवीक्ष्य शोशुध्यते ।
सदाभिमुखमेव यज्जगित पश्यतां सर्वतः ।
शरिद्धमलचन्द्रमन्डलिमवोत्थित दृश्यते ॥ ३४ ॥
सत्तेतदमरेश्वरप्रचलमौलिमालामिण — ।
स्फुरत्किरणचुंबनीयचरणार्रावदद्वयम् ।
पुनातु भगविजननेद्व । तव रूपमधीकृत ।
जगतसकलमन्यतीर्थगु छरूपदोषोदये ॥ ३५ ॥

इच्छामि भत्तं ! चेइयमित्तकाओसगो कओ तस्सालोचेऊं।

वहलोय तिरियलोय-उड्ढलोयिम्म किट्टिमा किट्टिमाणि

जाणि जिणचेइयाणि ताणि सन्वाणि तिसुवि लोएसु भवणवासिय

वाणवितर-जोइसिय-कप्पवासियित्तं चउविहा देवा सपिरवारा

दिन्वेण गन्धेण-दिन्वेण पुष्फेण दिन्वेण धूवेण दिन्वेण चुण्णेण

दिन्वेण वासेण दिवेण ण्हाणेण णिन्चकालं अंचंति पुज्जति

वन्दित णमंसन्ति अहमिव इह सन्तो तत्थं सन्ताइ णिन्चकाल

अंचेमि पूजेमि वन्दामि णमंसामि दुवस्वक्सओ कम्मक्सओ बोहि
लाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुण सपित्त होउ मज्झा

अथ पौर्वाण्हिकदेववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं पञ्चमहागुरुभिनत कायोत्सर्गं करोम्यहं।

(णमो अरहंताण चत्तारि मंगलं आदिकरके ९ जाप्य करे पुनः थोस्सामि स्तुति पढकर पंचगुरुभवित करें।)

## पंचगुरुभक्तिः

मणुयणाइदसुरधरिय छत्तत्तया, पंचकत्लाण सोक्लावलीपत्तया। दंशण णाणझाण अणंतं बलं, ते जिणा दितु अन्हं वरं मगलं ।१। जेहि झाणिगवाणेहि अइदब्हय, जम्मजरमरण रयणत्तप दब्हय। जेहिंपत्तं सिवं सासयं ठाणयं, ते महं दितु सिद्धावर णाणय ।२। पच आयार पंचिग्गसंसाहया बारसगाइ सुअजलिह अंगाइया। मोक्ललच्छी महंती महते सया, सूरिणो दितु मोक्लं गया सगया।। घोरमंसार भीमाडवी काणणे तिक्ल वियरालणट्टपावपचाणणे। णट्ट मग्गाण जीवाण पहदेसया, विदमो ते उवज्झाय अन्हे सया।। उग्ग तव चरण करणेहि खीणगया,

धम्मवरझाणसुक्केक झाणं गया। णिब्भरं तवितिरिय समालिंगया,साहवो ते महामोक्खपथमग्गया।। एण थोत्तेण जो पंचगुरु वदये गुरुष संसारघनबल्लिए छिदये। लहइ सो सिद्धसोक्खाइ बहुमाणणं,कुणइ कम्मिश्रणं पुंजपज्जालण

> अरुहा सिद्धाइरिया उवझाया साहु पंचपरमेट्ठीः। एदे पंच णमोयारा भवे भवे मम सुहं दितु ॥ ७ ॥

इज्छामि भत्ते ! पंचमहागुरुमित का उसग्गो कथो तस्सालोचेउ । अटुमहापाडिहेर सजुत्ताणं अरहंताण, अटुगुण सपण्णाण उड्ढलोयमत्थयिम पइह्रियाण सिद्धाणं,अट्ठपत्रयण भउसजुत्ताण आइरियाण, आयारादिसुदणाणोवदेसयाण, उवज्झायाण
तिरयणगुणपालणरदाण सन्त्रसाहुण णिच्चकालं अचेमि
पूजेमि बन्दामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहि
लाओ, सुगइगमण समाहिमरणं जिगगुणसंपत्ति होउ मज्झ ।

अय पौर्वाण्हिक देववन्दनायां पूर्वाचार्यातुक्रमेण सकल कर्म क्षयार्थ भावपूजावन्दनास्तवसमेतं श्री चैश्य-पचगुरुभक्तीः कृत्वा तद्धीनाधिकदोषविज्ञुष्यर्थं अन्तमपवित्रीकरणार्थं समाधि भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यह ।

### समाधिभक्तिः

(णमो अरहंनाण . चत्तारि मंगल ... आदि करके ९ जाप्य करे नतर थोस्सामि स्तुति कर समाधिर्माक्त पढे।)

> प्रथम करण चरणं द्रव्यं नमः। शास्त्राभ्यासो जिनपतिनृतिः सगितः सर्वदार्थः सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम् । सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावनाचात्मतत्वे सम्पद्यंता मम भवमवे यावदेतेऽपवर्गः॥ १॥ तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनम्। तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावद्यावन्निर्वाणसंप्राप्ति ॥ २॥

अक्लरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं। तं लमउ णाण देवय मज्झ य दुक्लक्लयं दितु ॥ ३ ॥

इच्छामि भंते । समाहिमत्तिकाउसग्गो कओ तस्सा-लोचेउ,रयणत्तय सरूव परमप्पज्झाणलक्लण समाहि सन्वकाल अचेमि पुज्जेमि वन्दामि णमंस्सामि दुवलक्लओ कम्मक्लओं। बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुण संपत्ति होउ मज्झं।

(अनन्तर यथावकाश आत्मध्यान करें।)



# स्वर्गीय श्री १०८ श्री आचाय शांतिसागर वीरसागर चन्द्रसागरजी महाराजकी सम्मिलित पूजन

( ले संघस्य ब्रम्हचारी सूरजमल जैन )

( संशोधकः-श्री प. मनोहरलालजी शाह सुजानगढ )

॥ स्थापना अडिल्ल ॥

हे गुरुवर श्री शांतिसिंधु मुनिराजजी। वीरसिन्धु गुणलान नमूं हितकारजी।। घोरतपस्वी चन्द्रसिन्धु वन्दन कर्छ। हृदय बिराजो गुरुवर आव्हानन कर्छ।।

ध्यं न्हीं श्री १०८ श्री आचार्य शांतिसागर वीरसागर चन्द्रसागर मुनयः अत्र अवतरत २ संवीषट् आव्हानन अत्र तिष्ठत, तिष्ठत ठ. ठः स्थापनं। अत्र मम सिन्निहिता भवत भवत वषट् सिन्निधीकरणम्।।

लाऊँ जलगगा विमलतरगा है अति चंगा भरि भूंगा।
तुम चरण चढाऊं पाप नशाऊं करू शी घ्र ज्यों भवभंगा।
श्री शातिसिन्धुजी वीरसिंधुजी चन्द्रसिन्धु मुनिवर ध्याऊ।
हो तत्त्व प्रकाशी स्वगंनिवासी करो कृपा ज्यों शिव पाऊ॥

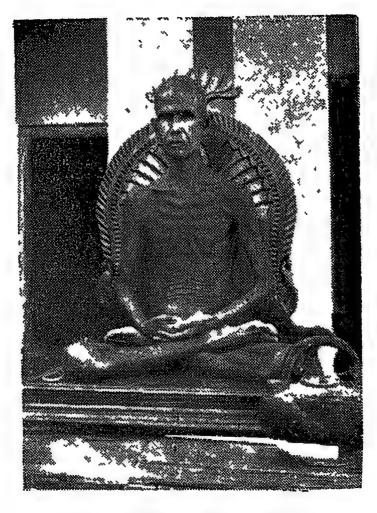
ॐ न्हीं आचार्य शांतिसागर वीरसागर चन्द्रसागरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वेपामीति स्वाहा ॥





श्री. परमपूज्य तपोनिधि स्त्र. आचार्य वीरसागर महाराज

**备每** 



श्री परमपूज्य तपोनिधि आचार्य शिवसागर महाराज

गोशीर घिसाया अलिगुंजाया केसरमिश्रित रंग महा।
भवताप नशावन सुल उपजावन चन्दन तुम्हें चढाऊ आ।।
श्री शांतिसिन्धुजी वीर सिन्धुजी चंद्र सिन्धु मुनिवर ध्याऊ।
हो तत्त्व प्रकाशो स्वर्गनिवासी करो कृपा ज्यों शिव पाऊ।।
ॐ न्हों. श्री आ \*\*\*\*\*\* चन्दन नि. स्वाहा।।

अ न्हा. श्रा आ प्राचन्दन नि. स्वाहा ।।
भोती सम मनहर अक्षत सुन्दर ले आया तव चरण गही ।
भे पूजूं ध्याऊं पाप नशाअ हे गुरु पाअं मोक्ष मही ।।
श्री शांतिसिन्धुजी बोरसिन्धुजी चन्द्रसिन्धु मुनिवर ध्याऊ ।
हो तत्त्वप्रकाशी स्वर्गनिवासी करो कृपा ज्यों शिव पाऊ ॥
अ न्हीं श्री आ प्राच्या अक्षतान् नि. स्वाहा ॥

ले कमल केतकी जुही चमेली चंपा आदिक फूल महा।
गुरु चरण चढाऊ बहु हर्षाऊ काम नगाऊं तुरत अहा।।
धी शांतिसिन्धुजी वीरसिन्धुजी चन्द्रसिन्धु मुनिवर ध्याऊं।
हो तत्त्वप्रकाशी स्वगंनिवासी करो कृपा ज्यों शिव पाऊ।।

ॐ न्हीं श्री आ ...........पुष्पाणि नि स्वाहा । ४ ॥ के न्यंजन ताजा हे मुख साजा, खाजा आदिक थाल भरा । पुर चरण चढाऊं कुधा नशाऊं हर्ष बढाऊ भनित भरा ।। श्री शांतिशिन्धुजी वीरसिन्धुजी चन्द्रसिन्धु मुनिवर ध्याऊं । हो तत्त्वप्रकाशो स्वर्गनिवासी करो कृपा ज्यों शिव पाऊं ॥ ॐ बहो आ .... नेवेद्यं नि स्वाहा

जगमग जगमग ज्योति मनोहर दौपक है प्रमु ले आज । मैं करूं भारती करू वीनती, मोह नष्ट अब कर पांड ॥ श्री शातिसिन्धु नी वीरोसन्धु नी चन्द्रसिन्धु मुनिवर ध्याऊ। हो तत्त्वप्रकाशी स्वर्गनिवासी करो कृपा ज्यों शिव पाऊ।।

अन्हीं श्री आ ''दीप नि. स्वाहा।। ६।। बहु द्रव्य सुगिधत हे गुरु ला कर्प्र मिला तुम हिग लाया। अग्निमें जारों कर्म विदारों पावे जित्र सुख अधिकाया।। श्री ज्ञातिसिन्धुजो वोरसिन्धुजो चन्द्रसिन्धु मृनिवर ध्याऊ। हो तत्त्वप्रकाञ्चो स्वगंनिवासी करो कृपा ज्यों ज्ञित पाऊं।। ॐ न्हीं श्री. आ. '' धूप नि स्वाहा।। ७।। नारग सुपारो श्रीफल भारी केला कपरख भिर थारी।। फल चरण चढाऊं मन हुलसाऊ कीरित पाऊ सुखकारी।। श्री ज्ञांतिसिन्धुजो वीरसिन्धुजो चन्द्रसिन्धु मृनिवर ध्याऊ। हो तत्त्वप्रकाञ्ची स्वगंनिवासी करो कृपा ज्यो ज्ञित्र पाऊ।

ॐ न्हीं श्री आ '''' 'फल नि स्वाहा । ८ ।। जल चन्दन अक्षत फूल मनोहर नेवज नयनन मनहारी । ले दीप धूप फल अर्घ्यं उतारी सूरजमल शिव सुखकारी ।। श्री शांतिसिंधुजी वीरसिन्धुजी चन्द्रिमन्ध् मृनिवर ध्याऊ । हो तस्वप्रकाशी स्वगंनिवासी करो कृपा ज्यो शिव पाऊ ।। ॐ न्हीं श्री आ ''' अर्घ्यं नि. स्वाहा ।। ९ ॥

#### अथ जयमाला-ग त

श्री शांतिसागर वीरसागर चन्द्रसागर मुनिवरा। घरकर दिगबर भेष तुमने जगत मन सब उद्धरा।। इन्द्र अरु नागेंद्र नरपति भक्ति कर सुख पाइया। हम भी सकल मन शुद्ध हो जयमालिका शुभ गाइया।।

#### पद्धडी

जय शातिविन्धू आचार्य जान. तुम भवि जन तारक हो महान। तुम जनक भीमगोडा सुमात, है सत्यवती जगमें विख्यात।२। है दक्षिण भोजसुग्राम सार, तुम जन्म हुआ आनन्दकार। उन्नींसो अठाइस साल माहि, आषाढबदो छट दिन कहाहि ॥३॥ मृतिमार्ग प्रगट कीना महान, तुम मुनि बन जगको दिया ज्ञान । तुम घोर तपस्वी ध्यान लीन, सिहनिष्क्रीडितवृत आदि कीन ।। तुम देह चढा इक सर्प आय, था कूर भयंकर फण उठाय। तुम चिगे न तिष्ठे ध्यान लीन, महिमा जिन धर्मसु प्रगट कीन ।। इक दुष्ट हाथमें ले कृपाण, मारन तुम आयो कोघवान। उपसर्ग सिंह चिवटी अपार, तुम सहा न कीना कुछ विचार ।६। तुम नगर नगरमे कर बिहार, भवि जीव सुद्यारें थे अपार । अतिममें कुथलगिरी आय, तहं ली समाधि निज तजी काय । ७। भादव बदि द्वितीया को सुजान, तुम सुरपद पाया था महान । में विनऊ हे गुरु शीश नाय, मेरी भवबाधा हरी आय ॥ ८। हे चीरसिन्धु गुरुराज आप, जो पूजे मिटता जगत ताप। जय बाल ब्रह्मचारी महान, तुम शांतिसिधुके शिष्य जान ॥ दक्षिणमे वीरम ग्राम जान, उन्नीसो तेतिस साल मःन। आषाढ शुक्ल पूनम कहांहि, सुत जन्मे हर्ष हुआ तहाहि ॥१०॥ पितु रामसुक्ख गुण गण निवान, भागू देवी मां तुम पिछान। यौवनमें ही सब तन विशाल, जग झझट दीक्षा घर कृपाल 🔢

थी करी तपस्या घोर आप, प्रगटाया जगमे यश प्रतार ।
भवि जन अनेक तुम चणं आय, जिन दीक्षा धारी शांति पाय ।।
या हुआ कठोर अदीठ रोग, मिर्गी कंपन वश कर्मभोग ।
तुम सहा सर्व हो शांति धीर. जप णमोकार तुम सत्य वीर ।
कर देश देशमें वृष प्रचार, आये खान्या जयपुर मझार ।
आचायं पट्ट लीना प्रधान, गुरु शांतिसिध आज्ञा प्रमाण ।।१४ ।
थे वहां हजारों भविक जान, मुनि अब्द १ तहां थे ज्ञानवान ।
थो आयां अब्दादशर सुजान, धावक जु श्राविका अरु महान ।।
इन बीच समाधी हुई जान, आश्विन कृष्णा मावस महान ।
द्रय सहस्र चतुवंश साल जान, हम बिनवे गुरुवर भित्त आन ।।
जय चद्रितधु मुनिराज आप, दिग आजाऊ तुम यश प्रताप ।
दक्षिणमें नांदसु गांव जान, विद माघ त्रयोदशी जन्म मान ।।
सीता मां नथमल पिता जान, जय छोड बने मुनिवर महान ।
श्री शांतिसिधु प्रिय शिष्य आप, तुम पूजे मिटता जगत ताप ।।

१-(१) आचार्य श्रीमहावीरकीर्तिजी, (२)आ. श्री शिवः सागरजी, (३) धर्मसागरजी, (४) पद्मसागरजी, (५) जयसागरजी (६) श्रुतसागरजी, (७) सन्मितसागरजी, (८) वर्द्धमानसागरजी।

२-मायिका-धर्ममितिजी, वीरमितिजी, विमलमितिजी, पार्शि-मितिजी, (जयपुर) पार्श्वमितिजी (अजमेर) सिद्धमितिजी, इन्द्रमितिजी, सुमितिमितिजी, शातिमितिजी, वासुमितिजी, ज्ञानमितिजी, सुपार्श्वमितिजी, पद्ममितिजी, चन्द्रमितिजी, क्षुल्लिका ज्ञानमितिजी, जिनमितिजी, अजितमितजी।

इक पांच खंढे करते सुध्यान, निर्जन थलमें आगम प्रमाण।
गर्मी अरु धूपमें आप जाय, फिर निश्चल ध्यान सु तुम लगाय।।
सिह निष्की छित आदिक महान, तप तपते गुरुवर जगत मान।
मिथ्यात्व मान्यताको मिटाय, तुम आरण प्रथोंको बताय।२०।
मुनि विद्वेषो इक नगर माहि, या किया महा उपसगं आहि।
या सहा, तजा निह धैयं धीर, आगम सेवक तह भये वीर।।
इकिसह तुम्हारा छल प्रभाव, था हुआ शांत तज कूर भाव।
तुम देश देशमें कर विहार, प्रगटाई जिन महिमा अपार।२२।
फागुण कृष्ण पूनम सुजान, था दो हजार संवत् महान।
बडवानीमें जा ली समावि, सुम्पद पाया वृषको अराधि।२३।
श्री शांतिसिन्धू श्री वीरसिन्धू,गुण गण निधान श्री मन्द्रसिन्धु।
सूरजमल वर्णी नमें आय, मेरी भव वाधा हरो आय।। २४।।

#### घता

जय शांति म्निशा चीर गणेशा चन्द्र गुणीशा ताप हरो। भवदिवसे तारो सुख विस्तारो कर्म निवारो पार करो।।

ॐ न्हीं श्री स्व. आचार्य श्री शांतिसागर वीरसागर चंद्र-सागर मुनिभ्यो अध्यै नि स्वाहा।

> दोहा-शांति बीर अरु चन्द्र मुनि जो पूजे है आय। भवदिक्षेसे वह पार हो, सुख अनन्त विलसाय।। इत्याशीर्वाद पुष्पांजिल।

# स्व. परमपूज्य चा. च. आचार्य श्री १०८ शांतिसागरजी महाराजकी पूजन

### दोहा

सीम्य छवी आचार्य की, करत शांत परिणाम। शांतिसागर नाम तुव, पुन पुन करहु प्रणाम। आओ आओ प्रेम लख, तिष्ट तिष्ट सुखकंद। सेवक जान दया करो, हृदये अति आनन्द।

ॐ -हीं शांतिसागर मुनींद्र अत्र अवतर अवतर सर्वीपट इत्याव्हानम् ।

ॐ न्हीं श्री शांतिसागर मुनीन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ. स्थापनम् ।

ॐ हीं श्री शांतिसागर मुनींद्र अत्र मम सिन्निहितो भव भव वषट् सिन्निधीकरणम्। (परिपुष्पाजिं क्षिपेत्)

### छंद त्रिभगी ( अष्टक )

कचन झारी प्रामुक जल ले, पूजूं तुम पद पद्म सुहाय। प्रभू हमारी जन्म जरा अरु, मृत्यु भेंट शिवपद सु कराय॥ संघ सहित प्रभु आग पद्मारे, आनन्द हृदय रह्यो उमगाय। पंचम काल कलक मिटाकर, काल चतुर्थ दतायो आय॥

ॐ न्हीं श्री शांतिसागराचार्येभ्यः जन्म जरा मृत्यू विना-शनाय जन्म् निर्वेपामीति स्वाहा ॥ जलं॥ १॥ मलयागिर घन सार गार, केशर कपूर तामें विसवाय। भवाताप मिट जाय हमारो, यासे तुम चरनन ढरवाय।।. संघ सहित प्रभु आप पधारे, आनन्द हृदय रह्यो उमगाय।, पचम काल कलंक मिटाकर, काल चतुर्थ बतायो आय।।.

> ॐ न्हीं श्री शांतिसागराचार्येभ्यः संसार ताप विनाशनाय चंदनम् निर्वंपामीति स्वाहा।। सुगंधं।। २ ।।

अक्षत शुभ साने उज्जल लेकर, चरचों तम पदकंज घराय।
अक्षय पद भम प्रगट करादो, भाव सहित तुम भिवत कराय।।
सघ सहित प्रभु आप पद्यारे, आनन्द हृदय रह्यो उमगाय।
पंचम काल कलंक मिटाकर, काल चतुर्थ बतायो आय।

ॐ -हीं श्री शांतिसागराचार्येभ्य अक्षयपद प्राप्तेय अक्ष-तान् निर्वणामीति स्वाहा ।। अक्षतं ।। ३ ।।

बेला चमेली कुद कदम गुल, गेंदा जुिह मचकुंद मंगाय।
मोगर केतिक अरु गुलाबके, सुमन समिपत मदन षलाय।।
संघ सहित प्रभु आप पधारे, आनन्द हृदय गह्यो उमगाय।
पचम काल कलंक मिटाकर, काल चतुर्थ बतायो आय।।

ॐ न्हीं श्री शांतिसागराचार्येभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम् निर्वेपामीति स्वाहा ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

पूडी खुरमा लाडू पेठा, सेव सलोनी सर्व सजाय। बाबर वरफी फेनी गोझा, घरत चरन मम क्षुधा विलाय।। संघ सहित प्रभु आप पधारे, आनन्व हृदय रह्यो उमगाय। पंचम काल कलक निटाकर, काल चतुर्थ बतायो आय।। ॐ -हीं श्री शांतिसागराचार्येभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वेपामीति स्वाहा ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

घृतकी ज्योति जलाय दीपमें, ढूंढू निजपद गयौ हिराय । लावो-तम ढिग गुरुवर प्यारे, मोह अंघेरा दूर भगाय ।। संघ सहित प्रभु आप पद्यारे, आनन्द हृदय रह्यो उमगाय । पचम काल कलंक मिटाकर, काल चतुर्थ बतायो आय ।।

> अ न्हीं श्री शांतिसागराचार्येभ्यः मोहान्धकार विनाश-नाय दोपम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

दशिवधि गंध चूर्ण करवाकर, खेऊं वैसांदुर महकाय। आठ करम मम काठ जलाओ, जो ससार मांहि रुलवाय॥ संघ सहित प्रभु आप पधारे, आनन्द हृदय रह्यो उमगाय। पचम काल कलक मिटाकर, काल चतुर्थ बताओ आय॥

> ॐ न्हीं श्री शांतिसागराचार्येभ्यः अध्टकर्मदहनाय धूपम् निवंपामीति स्वाहा ॥ धूपम् ॥ ७ ।

आम अंगूर दाख दाडिम वर, केला कमरख श्रीफल लाय। लोंग बदाम पूगीफल पिस्ता अरपों फल शिव मोहि कराय।। सघ सहित प्रमु आप पद्यारे, आनन्द हृदय रह्यो उमगाय। पंचम काल कर्लक मिटाकर, काल चतुर्थ बतायो आय।।

> 8% न्हीं शांतिसागराचार्येभ्यः मोक्षफल प्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा ।। फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्द अक्षत पुष्पोंसह, नित नेवेद्य दीप प्रजुलाय। धूप फलोंसे पूजूं तुमपद, पद अनर्घ्यं अब अविश मिलाय ॥ तंव सहित प्रभु आप पद्मारे, आनन्द हृदय रह्यो उमगाय । रचम काल कलंक मिटाकर, काल चतुर्थ बतायो आय ।।

ॐ न्हीं श्री शांति शगराचार्ये भयः अनर्घ्य प्राप्तये अर्घ्य निर्वेपामीति स्व हा । अर्घ्यं ॥ ९ ॥

### दोहा

शांति वीर नेमी मुनी, कुंथु आदि निभ पाय।

एलक, कुल्लक विमल चरित नवीं नमीं शिरनाय।।

संच तिहारी परम शुभ, भिव जीवन सुलदाय।

मोहीजन जो जगतके, सो क्यों दरश लहाय।।

अर्घ चढा चरचों चरन, करके भिक्त अनूप।

किया कृतारथ आय मुझ, बनो त्रिजगके भूप।।

ॐ न्हीं श्री शांति, बीर, नेमं', कुंथुआदिश्यः अनर्घ्यवद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ पूर्णार्घ्यं ॥

### दोहा

अब वरनो जय मालिका, सुनहु भविक चितलाय।
गुण बहुते आचार्यमें पर कछु कहहुं सुनाय।।
जयमाला

### पद्धडी छंद

( कई तर्जों में गाया जाता है ) जय शांति समुद्र तुम गुण अनन्त, हम गाकर कबहु न पाय अत । तुम दक्षिण देश जनम लहंत, है भोज ग्राम जो शुभ वसत । १।

वितु नाम भीमगोंडा लहाय, माता तुम सत्यवते कहाय। तुम बाल ब्रह्मचारी रहाय, लघु वयमें दीक्षा धरी जाय ।२॥ आत्मिक अपरिमित बल बढाय, अध्ययन ध्यान कियो बनाय । वारह भावना भाई अनूप, समझो है जगको पूर्ण रूप ॥३॥ निज चेतन अरु तन भेद पाय, चेतनसे ममतु तनसे छुडाय। तुम धीर दिगंबर रुपधार, तेरह विधि चारित चरे सार ॥४॥ ित ग्रीषम वर्षा ऋतु मझार, प्रकृति कृत वेदन सहे सम्हार। हिममे सरबर तट तप कराय, ग्रीषम गिरि शीर्ष मगन रहांच ।। वर्षामें वृक्ष तले सुजान, त्रय गुप्तिकी तीर कमान तान। मारे कर्मनको बिना कोध, निज आतमको घ्यावें सुकोध ॥६॥ इक्तबार गुफामें नागराज, आये तुम पर उपसर्ग साज। बहु काल सर्प कीडा करांय, तुम सुखमय ध्यान धरो सजाय । तहा दर्शक जन दुःख अति करांय, तुम अचल रूप मानों धराय। जब फणपति अपने गयोथान, श्रावक जन मन सतोष आन ।८। तुम्हरो यश प्रकट भयो मुनीश, जैनी जन नावें तुम्हें शीश। हम उत्तर वासी रुचि घरन्त, तुम दर्शन कब होवे महन्त ।।९।। धन घडी आज हम जगो भाग, लखलोने साचे गुरु सुराग। तुम जिन दक्षिणमें धर्म दंड, फेरी हे गुरुवर बहु प्रचड ॥१०॥ त्यों उत्तर प्रांत लियो सुधार, शुभ दया धर्मका कर प्रचार। हम ढील करी जिन धर्म बीच, अःकर तुमने सुध लई खीच।। प्रभु तुमिबन पार लगे न नाव, मिथ्यात्व नद्द परचड बहाव। हम कहे तुम्हे अकलक स्वामि, जिन धर्म उवारक सुगुरु नामि ।। यह संघ तिहारो परम शुद्ध, हम लख लख रोज लहें सुबुद्ध । तुम कौन मंत्र फूको बनाय, मानादि कषायें नहि दिखांयें ॥१३॥ सब मधुर मधुर भाषण करंत, निज काज सभारत सर्बोह संत। श्रावक जत मन निहं दु खन देत, उपदेश करत सद्बुद्धि हेत।। चर्याविधि लख लख नगर लोग, बहुहों प्रसन्न नींह रहत सोग। सब लोग चहत निज गृह मझार, ये चरण पडें स्वामि तुम्हार ॥ इस हेतु खडे होते है द्वार, भोजनकी विरिया कलशधार। आबाल वृद्ध नर नार साथ, कोईके भाग्यसे आओ नाथ ।१६। जिसके घर पहुंचत कोई संत, आई जानत निवि है तुरंत। बहु भिवत सहित दें असन आप, काटन चाहत भवके सुपाप 11 जिस घरमे नींह प्रभु पग परत, कोसत निज कर्मीको तुरंत। भोजन विशि प्रथा दई जनाय, हम जन्म कृतारथ तुम कराय ॥ नित प्रति शिक्षा क'ते बनाय, श्रावक जन सुनते मन लगाय। जन जेन अर्जन सर्बोह रहांहि, तुम दर्श करे धनि मुख कहांहि ।। प्रमु मोद बढो तुमसेय पांय, दिन रात ध्यान तुम्हरी रहाय। अब निज समान कर लेहि, मोहि यह जान रटत है नित्य तोहि।। हम उत्तर वासी धन्य भाग, निज मानत तम चरणोंको लाग। तम चरणन रज मस्तक घराय, हम सब कृतार्थ भये सुगुरु पाय।

### दोहा

नमन करत चरणों पडत, अहो सुगुरु सुखदाय।
भव समुद्र तें काढ लो, शिव पथ शीघ्र दिखाय।।
ॐ -ही श्री शांतिसागराचार्येभ्यः अध्यै निर्वपामिति स्वाहा।।
घत्ता-श्रीशांति महंता गुणन अनंता पूजत संता भिवत भरा।
कुन्दन यश गावे, वांछित पावे, मोद लहावे नमन करा।।

# श्री १०८ आचार्य वीरसागरजी महाराजकी पूजन

( रचयिता-चरणभक्त द्र. सूरजमल जैन ) स्थापना-(गीताछंद)

शुभ ईर ग्राममे श्रेष्ठिवर है, राममुल अति भले।
पितु-मातु सुत भये है, लाल हीशा नामले।।
आचार्यवर भी शांतिसिंधु, के निकट तुम पहुचते।
छोड परिग्रह मुनि भये हैं, वीरसागर शोभते।।
ॐ ही श्री चौरसागरस्वामिन् अत्रावतरावतर सवीषट्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।। अत्र मम सिन्नहितो भन भव वषट्

ा। अथाष्टकं। जोगीरासा छंद।।
गगिसिन्धुकी नीरमें लाऊ, मुनिमन सम शुचि होके।
जन्म मरणके नाश करन को, धारा दे मद खोके।।
वीरसागरजीके चरणोंकी पूजा करे मन भरके।
रोग नशे और संपति वाढे, शिव ललनी ले वरके।।
ॐ न्हीं श्री वीरसागर स्वामिने जलं निर्वंपामीति स्वाहा।।१॥
मलयागिरि घासि चंदन नीको, शुभ सिताभ्य मिलाऊं।
अग्निशिखा शुभ मिश्रित करके,पद पंकजमें चढाऊं। वीरसागरजी
ॐ न्हीं श्री वीरसागरस्वामिने चदनं निर्वंपामीति स्वाहा।।२॥
चंद्रकिरण सम उज्ज्वल अक्षतखंड विर्वाजत लाऊ।
पुंज देतही तब चरणागे, सक्षय निधिको पाऊ। वीरसागरजी।
ॐ न्हीं वीरसागरस्वामिने अक्षतं निर्वंपामीति स्वाहा।। ३।।

वेल चमेली मरुवा दीना, कुसुम मनोहर लाया। कुसुमबाण मम नाशो मुनिवर,तव चरणोंमें चढाया। वीरसागरजी ॐ ऱ्हीं श्री बीरसागरस्वािनने पुष्प निर्वेपामीति स्वाहा ॥४॥ घेवर फेनि खन्जक मोदक, कनका थाल भराऊ। तव चरणोंमें चढाऊं गुरुवर, क्षुघारोग नशाऊ । वीरसागरजी । ॐ न्हीं श्री वीरसागरस्वामिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वार्ग ॥५॥ स्वर्ण आरति गोघृत भरिके, शुद्ध कपूर मंगाऊं। जगमग जगमग आरति करिके, मिथ्यातमको हराऊ ॥ वीर ॥ ॐ न्हीं श्री वीषसागरस्वामिने दीप निर्वपामीति म्वाहा ॥६॥ द्रव्य अनेककी धूप बनाके, अग्नि संग खिपावे। अष्ट करम तत्काल नशतही, मोक्ष रमणिको पावे। वीरसागरजी ॐ न्हीं श्री वीरसागरस्वामिने धूपं निर्वंपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥ **आम्य काम्य बादाम सुपारी, केला अमरूद लाऊं।** श्रीफल आदिक, उत्तम फलले भेट घरत हर्षाऊ । वीरसागरजी ॐ -हीं श्री वीरसागरस्वामिने फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८॥ तोयं चन्दन शालिजतन्दुल, पुष्पं तूप लाके। दीपं धूपं पुंगी फलीघं, अर्घ्य धरो कंनाके ॥ वीरसागरजी ॥ ॐ न्ही श्री बीरसागरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

### भैरवी छंद

धन्य दिन आजका सबका किया मुनिराजका दर्शन। इन्हिका वदनाम्बुज देखे, हुआ है सबका मन पर्सन।। मुझे जिन कर्मोने घेरा, करादो उनसे तुम छुटकन।
करो मत देर अब गुरुवर, हुआ हूं इनसे में अकुलन।।
सुना है आपको मुनिराज, करम काटनमें तुम गुणवन।
रिव बह्म आया चरणोमें, वगदो सोक्षकी ललनन।।

#### ।। अथ जयमाला ।। तर्ज राधेक्याम ।।

धन्य धन्य है पिता रामसुख, माता भागुबाई है। तिनने पुत्र जन्म दिया है, भूतल आनन्द छाई है।। १।। एक सहसनव द्वात्रिशतमे, आषाढ शुक्ल हम मानी है। भानुसा जगमें चनकगया, पूनमको पावन कीनी है।। २।। लालहीरा तुमको कहते, सचमुचमें हीरा भाया है । गङ्गवाळ कुल में जन्म लिया, और माता गोद खिलाया है।।३।। दक्षिण देशमे जन्म आपका, ईरगांव शुभ भाता है। वन उपवन और कूप खाईसे, मनको बडा लुभाता है।। ४।। मात पिता नवयौवन सुतको, लखकर शादी ठानी है। बाल ब्रह्ममे रहूं पिताजी, शादि नहिं करानी है।। ५।। आचार्यवर श्री शांतिसागर, नाम ऐसा सुनते थे। खोजत खोजत पता चला तब, कोनुर गांवमे रहते थे।। ६ ।। हीरा जाल और खुशालचन्द्र, दर्शनली वहां जाते हैं। नय कुशल मूनिवरको पाकर, मनही हषति है।। ७।। दर्शन करके जब घर आये, मन वैराग्य समाया है। फिर जाकरके मिलें गुरुसे, चितमें यह जमाया है ॥ ८॥

एक सहसनों असिसम्बतमें, कुंभोज नगर जब आते हैं। फाल्गुन महीना शुक्ल सप्तमी, क्षुल्लक त्रतको पाते है ।। ९ ।। सूरीने भी दोक्षा देकर, वीरचन्द्र शुभ नाम घरा। दोनों धन्य समझते हैं, और अपनेको कृतार्थं करा ॥ १०॥ नगर नगरमें विहार करते, समडोडीमें आये है। तिहलूष मात्र परिग्रह जो है, कोषित भी दुःख दानी है।।११॥ उन्नीसो इक्यासि सम्वत माहि, मुनि वत लेवें ठानी। आश्विप सुदि ग्यारसके दिन ही, रूप दिगम्बर पाये है ॥१२। पम महाव्रतको तुम पालें, पंच समिति चित आनी है। पचेन्द्रियको वशमें करके, षट आवश्यक मानी है।। १३।। सप्तशेष गुणोंको धारे, मनमें खुशी मनाते है। बारह भावनको तुम भाके, फूले नहिं समाते है।। १४॥ ज्ञानका पगडा जीलका कन्ठा, धर्मका जामा धारे हैं। मन बच काय कटारी लेकर, पार सेन्यको सारे हैं।। १५ ।। द्वाविशपरीषह बारह तपकी सैन्य बनाकर जावेंगे। कर्माट्टोंको दूर भगाके, शिव सुन्दरको पार्वेगे ॥ १६॥ देश देशमें भ्रमते भ्रमते, बहुत प्रतिष्ठा रचाई है। नगर पिडावेमें भी आकर, विव प्रतिष्ठा कराई है।। १७ ।। सघमें आदिसागरजी भी बहुत ज्ञान्त कहलाते है। स्वानुभूतिमें मग्न रहे, तब बाहिरसे भय खाते हैं ॥ १८ ॥ और भी संघमें क्षुल्लक आदिक, बहुत समयसे रहते है। ध्यानाध्ययनमे मग्न रहे, और गुरुसे पढते रहते हैं।। १९॥

तूरज मवसागर पढता था स्वामिन् उसको वचा लिया। अत्यार वार गुण गाता भगवन, चरण दारणमें लगा लिया।।२०॥

#### ॥ धत्ता छंद ॥

जय इन्द्रिय रोधं मुनियत धारं, कामं क्रोधं लोम हरम्। जय भव निधि तरणं शांति करणं, शीलमगारं मोह हरम्।। दे न्हीं श्री वीरसागर स्वामिनें अर्घ्यं निवंपामीति स्वाहा।।

#### ॥ सोरठा ॥

वीरसागर मुनिराज, जो भवसिन्धुमें पढे । तिनका करो कल्याण, ताते आतमको लखे ॥ पुरपांजील ॥

# श्री पू. १०८ आचार्य शिवसागरजी महाराजकी पूजन

( रनियता-संघ म्य ज. सूरजमल जैन )
।। स्थापना ।। दोहा ।।

हे सूरी वर पूज्य श्री शिवसागर ऋषिराय।
हृदय विराजो आयकर तुम हो भिव सुखदाय।।
वीरितन्धु आचार्यके विनयी शिष्य महान।
पूजूं मन वच काय से ज्यों पहुचूं शिव थान।।

३४ -हीं श्री ज्ञिवसागर आचार्य परमेष्ठिन् अत्र अवतर २ संवीषट् आव्हाननम्।

ॐ न्हीं श्री शिवसागर आचार्य परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ २ ठः

ठः इति स्थापनं ।

अ ही श्री शिवसागर आचार्य परमेटिंठन् अत्र मम संत्रिहितो भव २ वपट्।

अथाष्टकम्— चाल-जोगीरासा

गगाजल सुस्वादु मनीहर लेकर झारी मरिये। चरण कमलमें घारा बेकर जन्म मरणको निशये।। शिवसागर जाचार्य महामुनि तुम हो भवि सुखदाई। पूज रचावे जो मिव साकर पार्वे सुख अधिकाई।।

🌣 न्ही भी आचार्य शिवसागराय.... ..जल नि. हवाहा ।

केशर शुद्ध घिसो अरु चन्दन, शुमकर्पूर मिलावो । श्री मुनिवरके चरण जनों भवि भव आताप नशावो ।। शिवसागर आचार्य महामुनि तुम हो भवि सुखदाई । पूज रचावे जो भवि आकर पार्वे सुख अधिकाई ॥

इति श्री आचार्य शिवसागराय .. .. चन्दर्न नि स्वाहा । लेय अखंडित शालिज तन्दुल जो भिव मुनि ढिंग आवे । चरण कमलमें पुंज देत ही अक्षय निधिको पावे ॥ शिवसागर आचार्य महामुनि तुम हो भिव सुखदाई ।

पूज रचावे जो भवि आकर पावें सुख अधिकाई ॥

अ न्हीं श्री आचार्य शिवसागराय . ... अक्षतान् नि स्वाहा । चम्पा कुन्द गुलाब जुईके फूल अनेक मगाये । पद पक्रजको पूजो याते काम महा निश्च जाये ।। शिवसागर आचार्य महामुनि तुम हो भिव सुखदाई । पूज रच वें जो भिव आकर पावे सुख अधिकाई ॥

अ न्हीं श्री आचार्य शिवसागराय ... . पुष्पं नि स्वाहा । मोदक फेनी गोजा आदिक शुभ नैवेद्य बनावे । चरण चढावे जो मुनिवरके क्षुघा रोग निश्च जावे ॥ शिवसागर आचार्य महामुनि तुम हो भवि सुखदाई ॥ पूज रचावे जो भवि आकर पावें सुख अधिकाई ।

अ न्हीं श्री आचार्य शिवसागराय .... . नैवेद्यं नि. स्वाहा । स्वर्णपात्रमें गोघृत अरु कर्पूर सजाकर लाया । करू आरती करूं विनती मोह नशो मुनि राया ॥ शिवसागर आचार्य महामुनि तुम हो भवि सुखदाई। पूज रचावे जो भवि आकर पार्वे सुख अधिकाई।।

अ न्हीं श्री अ चार्य शिवसागराय .......... दीपं नि. स्वाहा। मल्यागिर शुभ चन्दन आदिक की शुभ धूप बनाई। खेवो अग्नि मझार जले बहु कर्म महा दुखदाई।। शिवसागर आचार्य महामुनि तुम हो भवि सुखदाई। पूज रचावे जो भवि आकर पार्वे सुख अधिकाई।।

ॐ ऱ्हीं श्री आचार्य शिवसागराय ......धूपं नि. स्वाहा ।

आम्म अनार सुश्रीफल केला पिस्ता आदिक लाऊ। चरण चढाऊं भी गुरुवरके मोक्ष महा फल पाऊं।। शिवसागर आचार्य महामूनि तुम हो भिव सुखदाई। पूज रचावे जो भिव आकर पावें सुख अधिकाई।।

ॐ हीं श्री आचार्य शिवसागराय... ....फलं नि. स्वाहा ।

जल चन्दन तन्दुल आदिक शुभ आठों द्रव्य मिलावे। जो गुरु चरणोंको आ पूजे ज्ञान ''सूर्य '' प्रगटावे।। शिवसागर आचार्य महामुनि तुम हो भवि सुखदाई। पूज रचावे जो भवि आकर पावे सुख अधिकाई।।

ॐ -ही श्री आचार्य जिवसागराय ... अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

#### दोहा

शिवसागर मुनिराजजी, हो जगके हितकार। गाऊ अब जयमालिका, सुनो भविक मन हार।।

#### जयमाला । पद्धरी छन्द

जय शिवसागर आचार्य जान, भवि जीवनहित कर्ता महान । जय दक्षिण दिश अडगांव ग्राम, श्रेष्ठी नेमीचन्द तहां महान ॥ नित पत्नी दगडाबाई जान, शुभ पुत्र जन्म दीना महान। तुम जन्म नाम हीरामुलाल, लख मात विता होते निहाल ।। खंडेलवाल जाति अनूप, तुम गोत्र रांवका है मुरूप। पढ लिख कर तुम ज्ञानी सुहोय, ससार भोगको शीघा खोय ।। जय बाल ब्रह्मचारी महान्, गुरु वीरसिन्धु ढिंग तुरत आनः ली सप्तम प्रतिमा तुम दयाल, मुक्तागिरीमें सब अशुभ टाल।। जब आया संवत् दो हजार, फागुन सुद पंचम तिथि सुखार। श्री सिद्यवर कूट सु क्षेत्र जान, ली क्षुत्लक दीक्षा तुम महान् ।। शिवसागर तुमरा **रखा नाम, तुम तप तपते आगम प्रमाण** । फिर दो हजार छह साल माहि, रहते गुरु संघ नागौर जाहि।। गुरवीर सिंधुसे कहत सीय, जिन दीक्षा देवो नाथ मीय। वैराग्य भाव तब जगमगात, मानो शिव मारग ही दिखात ॥ आसाढ सुदी ग्यारस सुजान, तुम घरा दिगम्बर रूपजान। छत्तीस गुणोंको हे सुवीर, तुमपालो परिषह सहो धीर ।। तुम सघमें रह करके महान्, तप करते ज्ञानी तुम सुजाम । फिर दो हनार चौदह सुसाल, आसोज बदी मावस कुपाल ॥ जब जयपुर खान्यामें महान्, गुरुदेव समाधी हुई जान। हावीर मकीर्ति सूरी समक्ष, अरु वर विधि संघ तहं रहत दक्ष ।।

फिर कर आग्रोजन तहां जान, कार्तिक सुद ग्यारस दिना मान। आचार्य पट्ट दीना महान् तुमको तब हे गुण गण निधान।।११।। हम गुण गावें तुमरे महान्, तुम गुण गण की हो खान जान। हम नमन करे मस्तक नमाय, सूरजमल वर्णी हर्ष लाय।।१२।।

#### घता

जय जय मुनिवर जी हे ऋषिवर जी,

तुम चरणन हम नमन करें।

जय महाव्रतधरजी करुणा करजी,

तुम पूजे सब कर्म हरें।।

👺 ऱ्हीं श्री आचार्य शिवसागराय ......अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

#### दोहा

शिवसागर आचार्यको, जो पूजे मन लाय। स्वर्ग संपदा भोग कर, निश्चय शिवपुर जाय।।

- इत्याशीर्वादः -

स्वर्गीय श्री १०८ आचार्य शांतिसागर, वीरसागर चन्द्रसागर मुनित्रयकी

## सम्मिलित आरती

( ले - ब्र. सूरनमल जैन )

( संध्या समय बोलनकी, चाल-ओ जय जिनवर देवा )
ओं जय शांति बीर मुनिराय, स्वामी जयचन्द्र निन्धु मुनिराय।
आरती तुमरी उतारूं २, जय जय जय मुनिराय।। ओं जय।।
नगन दिगम्बर तुम हो स्वामी, सुन्दर काय लखाय।
करी तपस्या भारी २, शिव रमणी हुलसाय।। ओं जय।।
ज्ञान सिन्धु सब जन हितकारी, अद्भुत महिमा पाय।
सुरपति पूजत तव चरणोंको २ हर्ष हर्ष शिंग्नाय।। ओं जय।।
मूलगुणोंको तुमनें पाले, दोष रहित मुनिराय स्वा।
सत उपदेश सुनाकर २, सन्मारग वतलाय।। ओं जय।।
अन्त समय निज लख कर स्वामी, ली समाधि हुलसाय।
स्वगं पधारे गुरुवर तुम हो, सुमन महा पद पाय।। ओ जय।।
इन मुनिवर की दीपक लेकर, जो आरती उतराय स्वामी।
"सुरज" शिवपद पावे २, सुन सपति अधिकाय।। ओ जय।।

## श्री शांतिसागर महाराजकी आरती

( रचियता-धर्मरत्न पं. लालारामजी ज्ञास्त्री )
करू आरती ज्ञांति सिन्धुकी, मगलमय आचार्य प्रमुकी ।।
मारत भरमें संघ चलाया सब लोगोंसे पाप छुडाया ।
रत्नत्रय भी प्रहण कराया, जूद स्पिशत जल छुडाया ।। करूं ।।
नागोपद्रच तुमने जीता, कीटोपद्रच भी तुमने जीता ।
घोर तपाची तुम विख्याता, हो तुम विष्म निवारक त्राता । क ।
जिनालयोको पवित्र रखने, अन्न त्याग तुमने ही किया ।
नाना कोटि मत्र जप कर्ता, राष्ट्र मित्रमडलवर कर्ता ।। क. ।।
ताते यह आरती तुम्हारी, करूं भिनतवश विष्म निवारी ।
मोक्षमार्ग हमको भी दीजे, अपने सम हमको भी कीजे ।।
करू आरती शांतिसागरकी, मगलमय आचार्य प्रमुकी ।।



# वीरसागरजी महाराजकी आरती

( ले - ब्र सूरजमल जैन )

अ जय वीर सिन्धु मुनिराय-स्वामी जय वीर सिन्धु मुनिराय। आरती तुमरी उतारूं २ जय जय जय मुनिराय।। अ जय।। वीर गांवमें जन्म आपका-भागु मां बतलाय, स्वामी—रामसुखके प्यारे २ हीरालाल कहाय।। अ जय।। यह ससारा दुखमय जाना शांति सिन्धु ढिग जाय, स्वामी—धरी दिगम्बर दीक्षा २ मोह सुभट भगवाय।। अ जय।। छत्तीसमहा तुम गुणको पालें मनमें वहु हर्षाय, स्वामी—कर तपस्या भारी २ अनुभव रस फल पाय।। अ जय।। इन मुनिवरकी करे आरती जगमग ज्योति जलाय, स्वामी—" सूर्यं" तेज सम चमके शिव रमणी फल पाय।। अ जय।।

## श्री शिवसागरजी महाराजकी आरती

( ले-ब्र. सूरजमल जैन )

ॐ जय शिवसागर मुनिराज, स्वामी जय शिवसागर मुनिराज।
आरती तुमरी उताह २ तारण तरण जहाज ॥ ॐ जय ॥१॥
नेमीचन्दके तुम सुत प्यारे, दगडा मां सुखदाय-स्वामी।
वीर सिन्धु गुह कीने. २ राग द्वेष नहीं पाय ॥ ॐ जय ॥ २ ॥
भेष दिगबर धरा आपने, छोड कुटुंब परिवार-स्वामी।
मोह पिशाचको मारा, २ शिवरमणी भरतार ॥ ॐ जय ॥३॥
दीपक लेकर हरे आरती जो प्राणी सुखदाय-स्वामी।
"सूरज" शिवपुर पावो२ नमो नमो तुम पाय ॥ ॐ जय ॥४॥

#### श्री आदिनाथ भगवानकी आरती

( ले.-ब्र. सूरजमल जैन )

ॐ जय ऋषभदेव नाथा । स्वामी जय ऋषभदेव नाथा ।। आरती तुमरी उतार्कं २ देवो सुख साता ॥ ॐ जय ॥ १ ॥ नाभिरायके प्यारे नन्दन मरु देवी लाला। आदिनाथ है अघहर २ जगमें विख्याता ॥ 🌣 जय ॥ २ ॥ जन्म महोत्सव करने आये स्वर्गीके नाथा। नाचे कूदे अद्भुत २ मनमे हर्षाता ।। ॐ जय ।। ३ ।। स्वानुभवकी घूनि रमाके अब्ट कर्म जारे। लोकालोक प्रकाशक केवल दर्शाता ॥ ॐ जय ॥ ४ ॥ नैनापुरमें आप विराजे क्यामबरणस्वामी, प्रमु पद्मासन स्वामी भामण्डल भी अद्भुत २ शिवमग दिखलाता ॥ ॐ जय ॥ ५ । दीप धूपसे करूं आरती मोह तिमिर नाशी। शुद्ध निरंजन तुम हो जय वीरजवंता '।। ३३ जय ।। ६ ।। वीरसिन्धु मुनिराज पधारे वर्षायोग धरे स्वामी-' सूर्यं ' चरणमें आया देवो शिव माता ।। ॐ जय ।। ७ ।।

#### श्रावकपूजाविद्यान

# श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी आरती

( ले.-संघस्थ व सूर्यमल जैन )

जय जय पारसनाथ, ॐ जय नाथ, वासव ज्ञत तुम वन्दे।। जय २ ।।

बाणारसी सुखकार जन्म विचार, अश्वसेनके चन्दे ॥ जय २ ॥ माता बामा लाल, नाऊ भाल, मेटो भवके फन्दे ॥ जय २ ॥ पंचकत्याणक सार, भये है अपार, अजी शिवपुरके वासिन्दे

।। जय २ ।।

द्रम द्रम बाजत है मिरदगे मघवा नचत स्वछन्दे ॥ जय २ ॥ दोपक धूप बनाऊ, थाल सजाऊं आरती करू आनन्दे ॥ जय २ ॥ हिन्त वरन तन जान, अति सुख खान फण सोहे सिर खन्दे ॥ जय २ ॥

पद्मासन जिनराय, सौम्य लखाय भामण्डल सुखकत्दे ।। जय २।। वीर सिन्धु मुनिराय, गुरुजी बनाय सूर्य नमें आनन्दे ।। जय २।।

\* \* \*

## श्री शांतिनाथ भगवानकी आरती

( ले.- ब. सूरजमल जैन )

अजय शांतिनाथ स्वासी। प्रभु जय शान्तिनाथ स्वासी। अजय।

मन वच्तिनसे बन्धु, जय अन्तरयामी।

गर्भ जन्म जब हुआ आपका, तीन लोक हुषे स्वामी।।

इंद्र कियो अभिषेक शिखरपर शिव मगके स्वामी। ॐ जय।१।

पत्तम चक्ती भये आपही षट्खंडके स्वामी-प्रभु षट्-।

राज्य विभवको भोगे २, कामदेव नामी।। ॐ जय।। २।।

अतुल विभवको तृणवत त्यागी, हुये कर्म 'नाशी-स्वामी।

भये आप तीर्थंकर २ शिवरमणी स्वामी।। ॐ जय।। ३।।

वीर सिन्धुको नमस्कार कर तव आपती स्वामी-प्रभु।

स्रज शिवपुर पावो २ महा सुख धामी।। ॐ जय।। ४।।



सातवी जिनवाणी, माता की;

बारति दु:ख हरन्ते ॥ ७॥

जो भवि आय अरे, पूज करे;

दिन दिन तिन आनन्दे॥ ८॥
भव दुख हरो कृपाल, मनोहरलाल';

शाह नमें सुख-फन्दे ॥ ९॥

# श्री महावीर स्वामीजीकी आरती

(ले.-ब सूरजमल जैन)

जय जय सन्मितजी, सन्मितजी, वर्द्धमान, गुण खानी, आग्ती मुखदानी। करू तोरी, होवे मुक्ख महानी जय जय स ॥ १॥ स्वर्ग अच्युतसे हो, तुम आये. त्रिशला गर्भ मझारे। सेवा कर माता छप्पना, कन्या आनन्द कारे ॥ जय । २॥ भेत्र सिताको है तेरसको जन्म भयो तुम वीरा।

आसन कम्पा है स्वर्गींमे, सुमन करे जयकारा ।। जय ।। ३।।

#### श्रावकपूजाविद्यान

कीनो अभिषंक, मेर पर, वर्द्धमान उच्चिरियो। जय।। ४।।
भव तन जान लिया दुखकारा, त्याग किया उन सारा।
कीना लोचन है, केनोका, वाल ब्रह्ममुनि प्यारा।। जय।। ५।।
घोर तपस्या है प्रभु कीनी, घाति कर्भ प्रजारा।
केवल ज्ञान लहा, सुखकारी, दे उपदेश सुखारा।। जय।। ६।।
पावापुरमे है सर सुन्दर, ध्यान धरा उस अन्दर।
नाश किये विधिको, अवशेषे, प्रभु पाई शिव सुन्दर। जय। ७।
वीर सिन्धुको सिर नावो गावो गुण अमलाना।
'सूरज' कर जोडे, प्रभु थारा, मिलता है शिव याना। जय।८।

<sup>—</sup> लेकर ऐरावत गज चिंढयो, इन्द्र महा परिवारा।
कुडलपुरमें है, तब आये, नृप सिद्धारय द्वारा।। जय।।
पुण्य विशाला है, इन्द्राणी, लेकर जिन महावीरा।
दीना पतिवरको, वह निरखे, न्हवन कियो सुखकारा।। जय।।
फिर वह इन्द्राणी, वस्त्रोंको, अरु आभूपण लेकर।
मुदित किये मनको, पहनाये, आरती दीपक गहकर।। जय।।

## जिनवाणी माताकी आरती

( ले.-ब. सूरजमल जैन )

जय जय जिनवाणी, जिनवाणी। सरस्वति तू, अमलानि, आरती सुखदानी। करूं तोरी, पावें, सुख महानी, जय जया। १।। ग्यारह अग धरी, तू माता, चउदह पूर्व लहानी। तू है निर्दोषा, जगदम्बे, भविजन आनन्द दानी ।। जयः।। २। वीर हियाचलसे, तू निकली, गौतम गंग समानी। फैली सब जगमे, शारदा, कहते सन्त महानी ।। जयः ।। ३। आठों कर्म महा, दुःख देवे. नाशक तेज कृपाणी। भवदिध है तरणी, तू अम्बे, भव्य कमल विकसानी । जय ।४ पापी दुष्ट महा, तुझ ध्यावे, पावे मोक्ष निशानी। अविचल सुक्ख जहां, सिद्धोंका, तारण तरण बखानी। जय ।५ वीर सिन्धु महा, गुरु राया, सूर्व नमें गुणखानी। अद्भुत हे माता, तब ध्यावे, कर्म नशे दुःखदानी ।। जय । ६।

\* \* \*

#### सिद्ध भगवानकी आरती

(चाल-जय जय पारसनाथकी) (रचियता-ब सूरजमल जैन)

जय जय सिद्धोकी, आरती करू अकलकी-जय जय सिद्धोंकी ॥ १॥

पहले मनुभवमे मुनिराया, बनकर कर्म खिपाया। पाय चतुष्टयको सुख पाया. भविजन आतन्द ध्याया।। जय जय।। २।।

आठो कर्म महा दुखदानी, नाश किया तुम ध्यानी । वसु गुण प्राप्त किया तुम ज्ञानी, ध्यावे तव श्रद्धानी ॥ जय जय ॥ ३ ॥

पर्व अठाईका है आया, सिद्ध चक्र मडवाया ।
तुम गुण पूज करे, हर्वाया, नाच नाच गुण गाया ।।
जय जय ।। ४ ।)

स्वर्ण रकाबीमें, गोघृत ले, सुन्दर दीप जलाया। धूप दज्ञागीको फिर खेया, कर्म उडे दुखदाया।। जय जय।। ५।!

सिद्ध शिलामे जा, तुम बैठे लोकालोक निहारे। अविचल सुख जहां सिद्धोंका 'सूरज 'हो भव पारे।। जय जय ॥ ६ ॥